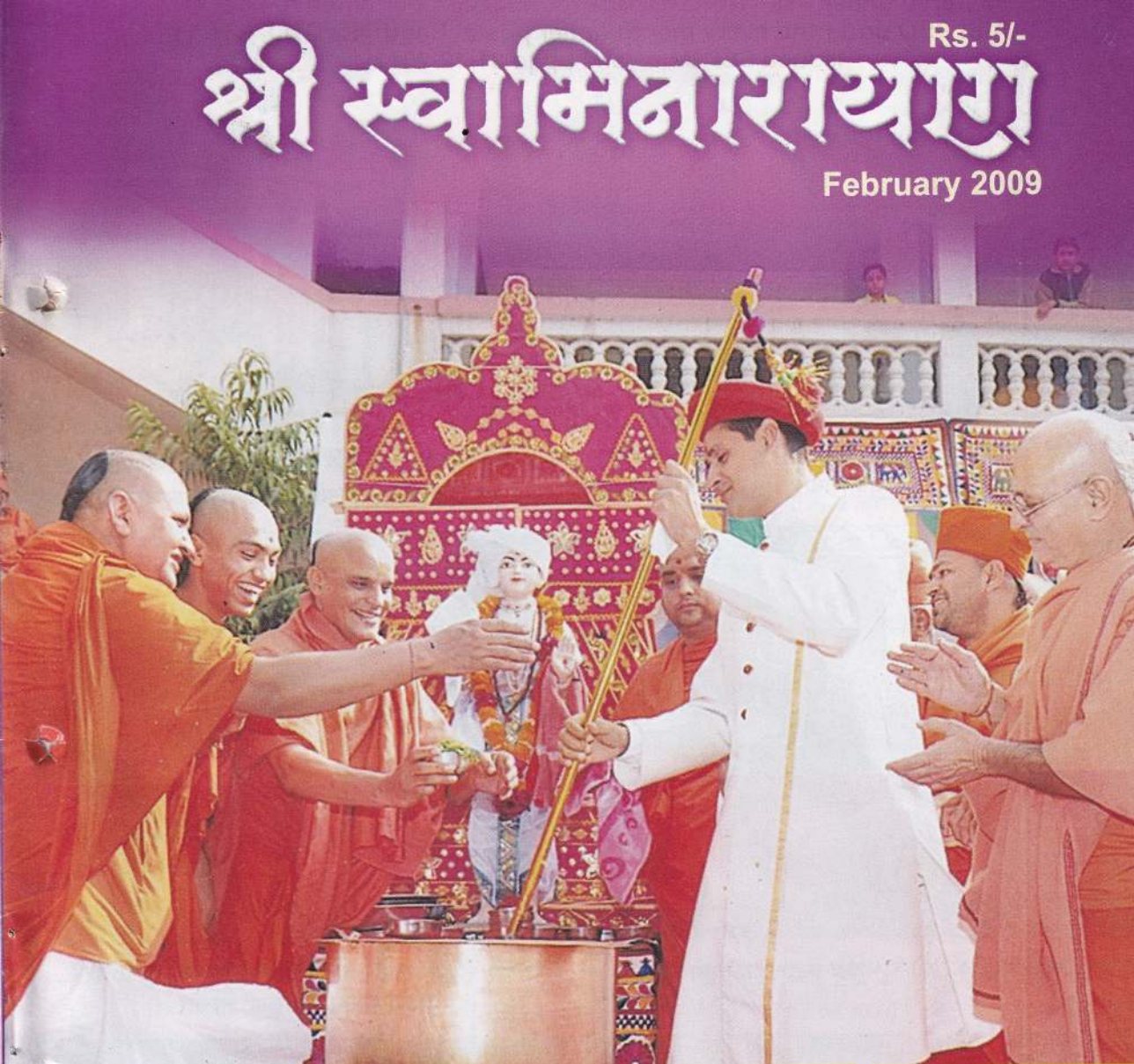
Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

February 2009







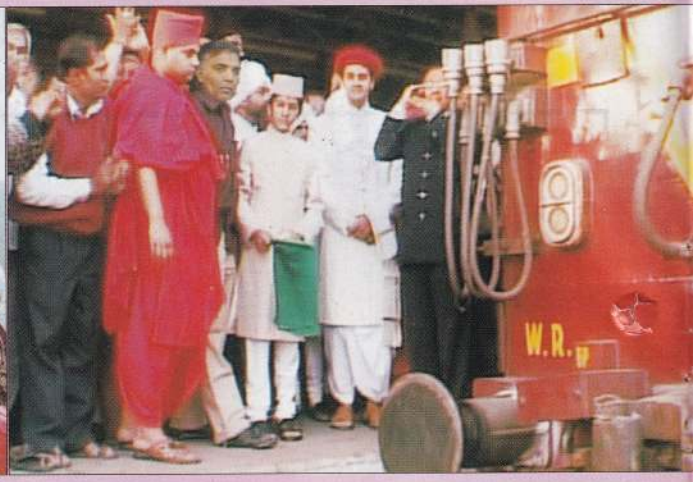


પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે ઉજવાયેલ શાકોત્સવ, નારણઘાટ, જીવરાજપાર્ક, સમો, નરનારાયણ

પ્રકાશક: શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧



भायला गाँव के शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा साथ में देव स्वामी (महंत नारायणघाट) एवं को. जे.के. स्वामी



छपैया स्पेश्यल ट्रेन के यात्रियों को आशीर्वाद देकर प्रयाण कराते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री



श्यल ट्रेन के यात्रीकों को शुभेच्छा प्रदान करते हुये स्वजन



स्पेश्यल ट्रेन की यात्री सां.यो. बहने तथा कर्मयोगी बहनें, छपैया धाम पहुंचने की तस्वीर



भायला गाँव में शा.स्वा. रामकृष्णदास के पारायण प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



मोटेरा गाँव में सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा व्यासपीठ पर कथामृत पान कराते हुये शा.स्वा. रामकृष्णदासजी



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
सद्गुशास्त्रीस्वामीहरिकृष्णदासजी(महंतस्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश १००००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 22 फरवरी-2009

अनुक्रमणिका

१. अस्मदीयम २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३
३. श्री स्वामिनारायण म्युझियम ४
४. आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने चमत्कार दिखाया था ९
५. श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद मंदिर १०
६. सत्संग बालवाटिका १२
७. भक्तिसुधा १४
८. प्रश्न पेटी १९
९. सत्संग समाचार २०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्

यह स्वामिनारायण संप्रदाय परंपराओ से भरा हुआ है । भगवान श्री स्वामिनारायण इस लोक में सर्वजीव हितार्थ प्रगट होकर, संप्रदाय की स्थापना करके, वर्षो तक सत्संग में विचरण करके जीवात्माओं के कल्याण हेतु सुन्दर उपाय किये । उपाय यह कि देव, आचार्य, संत तथा सत्शास्त्र इसके साथ मंदिरों को धरोहर के स्प में दिये । हम बड़े भाग्यशाली हैं कि श्रीजी महाराज के समय में जो उत्सव मनाये जाते थे, जिसे वे बड़े आनंद के साथ स्वयं मनाते थे ठीक वैसे ही उसी समय एवं स्थिति में मनाये जाते हैं । इससे उनकी प्रत्येक क्षण में उपस्थिति सदा बनी रहती है । श्रीजी महाराज की अनुपस्थिति का आभास तक नहीं किसी को होता है । लेकिन जरुरत है मात्र श्रीजी महाराज की आज्ञा में रहने की । यदि प्रभु का होकर रहेंगे तो अपने आप आनंद के भोक्ता बनेंगे । जिन्हे इस प्रकार की अनुभूति नहीं होती तो वे अवश्य यह समझे कि उनमें अभी कोई कमी है । भक्तों की शुद्ध उपासना के लिये श्रीहरिने स्वयं नव मंदिरों का निर्माण कराकर उनमें देवों को प्रतिष्ठित करके आज्ञा एवं आशीर्वाद दिये कि इन स्वस्प्रों में तथा हमारे में लेश मात्र भी अन्तर नहीं है । इसलिये भेद नही मानना । उन्ही स्वस्प्रों में रहकर हम सभी की मनोकामना पूर्ण करेंगे और भक्तों द्वारा दी गई वस्तु को भी स्वीकार करेंगे, जो भाव से मुझे भोजन करायेंगे उसे भी हम ग्रहण करेंगे । वस्त्र, अलंकार इत्यादि को स्वीकार करके मनोरथ पूर्ण करेंगे । जो वरदान आजतक सत्य होता रहा है, इसके साक्षी हजारो भक्त है ।

आज विश्व के फलक पर विद्यमान जितने भी मूल संप्रदाय के मंदिर है उनका आदिम मंदिर श्रीहरि स्वयं बनवाये थे, जो कालूपुर-अहमदाबाद के मध्य में विराजमान है । इस मंदिर की प्रतिष्ठा फाल्गुन शुक्ल-३ को स्वयं श्रीहरिने अपनी बांहो में लेकर भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव को अपना स्वस्प मानकर की थी । ऐसे अपने उपास्य श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव तथा प्रागट्योत्सव हम सभी के समक्ष आ रहा है । वे दोंनो उत्सव श्री नरनारायणदेव के प्रांगण में बड़े धूमधाम के साथ मनाये जायेगे ।

इससे भी अधिक अपने स्थान पर अपने पुत्र के स्प में स्वीकार करके हम सभी के गुरु के पद पर जिनकी स्थापना की है ऐसे श्री नरनारायणदेव के प्रथम आचार्य प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्म जयंती (द्विशताब्दी) आगामी तारीख ३-६-०९ को आ रही है । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा उन्हीं की अध्यक्षता में धर्मकुल वंदना महोत्सव धूमधाम से एक साथ मिलकर ता. १-६-०९ से ता. ३-६-०९ तक मनाने का निश्चय किया गया है। जिसके कार्यक्रम की स्परेखा आप सभी के समक्ष सन्निकट भविष्य में प्रगट की जायेगी । इसलिये भक्तों के लिये उत्सव की हारमाला सामने आ रही है इसके लिये इस उत्सव में तन, मन, धन से सहयोग देकर अपने जीवन की सार्थकता समझनी चाहिये, इसी में अपना कल्याण निश्चित है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदास का
जयश्री स्वामिनारायण



३. जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पारायण प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पारायण के पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
आमजा गाँव में (त. कलोल) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदीसणा (त. कलोल) पारायण के प्रसंग पर पदार्पण ।
८. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
वहीं पर डॉ. वी.एम. पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने पधारे ।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर समी (त. माणसा) पारायण की पूर्णाहुति तथा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
११. श्री स्वामिनारयण मंदिर नारायणघाट शाकोत्सव पर पदार्पण ।
जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धनुर्मास धून प्रसंग पर पदार्पण ।
घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग धनुर्मास धून प्रसंग पर पदार्पण ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में धनुर्मास धून महोत्सव की पूर्णाहुति अपने हाथों से सम्पन्न किये ।
२६. डांगरवा (पाटीदार-तलपद) श्री स्वामिनारायण मंदिर - पदयात्रा प्रसंग पर हरि भक्तों को आशीर्वाद देने पधारे ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा (श्री प्रभा हनुमानजी) के पारायण पूर्णाहुति के प्रसंग पर पदार्पण ।
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर भायला (धोलका देश) पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पदार्पण ।
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर गोठीब (पंचमहाल) सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।
३०. बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचकुंडी विष्णुयाग प्रसंग पर पदार्पण सायंकाल मूली में पदार्पण ।
३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में वसंत पंचमी के रंगोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री साथ में पधारे ।

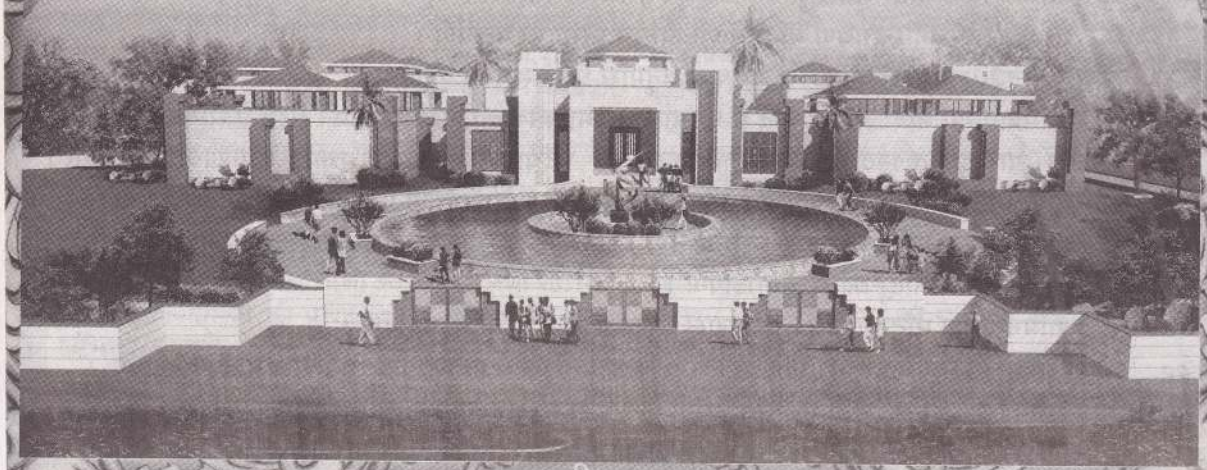
श्री स्वामिनारायण म्युझियम

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारायणभाई पटेल (अहमदाबाद

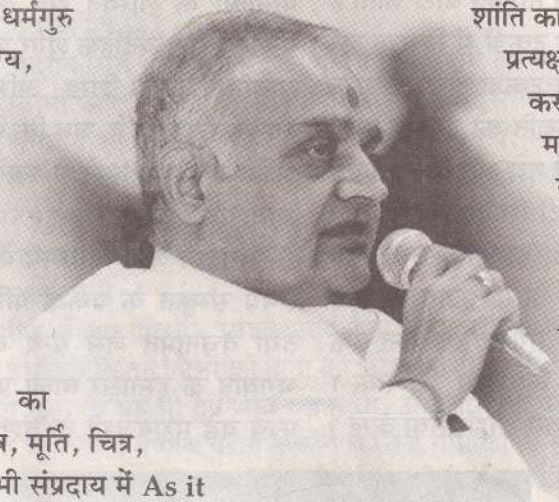
भगवान श्री स्वामिनारायण का नाम आज सारे जगत में गूंज रहा है। सज्जन या सन्नारियों के हृदय में श्री स्वामिनारायण की छबि उतर गई है। स्वामिनारायण के विवेक वर्तन की अविस्मरणीय छाप अंकित हो गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में संप्रदाय के आध्यात्मिक प्रेरणा स्त्रोत प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस धर्म मंडल के प्रज्वलितज्योति में घी-तेल का कार्य कर रहे हैं। उसी की एस झलक यहाँ दर्शनीय है।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने जन समाज में श्री कृष्णकी भक्ति-उपासना का प्रवर्तन करके मानव समाज में कुरिवाज अज्ञानता, अंधश्रद्धा जैसे कीचड़ से फंसे लोगों को बाहर निकाला है। "जन सेवा ही प्रभु सेवा है" उपदेश को स्वयं चरितार्थ किया है। प्रभु सेवा के लिये तथा जन सेवा के लिये व्यवहारिक कार्य करना पडे, उसी हेतु से संप्रदाय में दो गादी की स्थापना की, जिसमें प्रथम अहमदाबाद - श्री नरनारायणदेव तथा दूसरी वडताल में - श्री लक्ष्मीनारायणदेव। शुद्ध संचालन हो इसके लिये अपने दत्तक पुत्रों के ऊपर आचार्य पद का भार दिया, जिससे त्यागी-गृही दोनो को लाभ मिल शके। आज के इस मार्केटिंग युग में जैसे कोई व्यापारी अपने हल्के माल को बेंचने के लिये अपनी नकली वस्तु के लिये असल वस्तु का अनुकरण करने लगता है। ठीक यही स्थिति इस शुद्ध तथा निर्मल धर्म तथा उसीका अविभाज्य अंग जैसे धर्मवंशी आचार्यश्री, संत, शास्त्र, मंदिर इत्यादि का नकल करने वालों की आज तो भीड लग गई है। अहमदाबाद के गादी के आचार्यश्री तथा श्री स्वामिनारायण भगवान के छठे वंसज प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने आचार्यपद सं. २०२५ आश्विन शुक्ल द्वितीया से सं. २०६० आश्विन शुक्ल द्वितीया तक अर्थात् कुल ३५ वर्ष तक आचार्य पद की गरिमा को बढाये रहे। वर्तमान काल में श्रीहरि के सांतवे वंशज प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को पदारुढ करके स्वयं जनहित कार्य में निवृत्त जीवन पसंद किये।

इस गादी पर पूर्व में पांच आचार्यों को छोड़कर यह प्रथम घटना है कि गादीस्थ आचार्य शारीरिक-आर्थिक-मानसिक शुख संपत्ति होते हुये सत्संगी लोगं की ही नहीं परंतु विश्व के सामान्य व्यक्ति की सेवा करने के लिये इतने बडे, उच्च, गरिमा वाले पद का त्याग करके स्वेच्छया निवृत्त होकर सेवा यज्ञ में लग गये हैं। सत्ता के इस त्याग का प्रभाव बड़े-बड़े मंहत-संत, मठाधिकारियों धर्मगुरुओं के हृदय पर पड़ा। देश विदेश में रहने वाले नर-नारी सभी दर्शन की लालसा में रहते हैं। आबाल वृद्ध नरनारी सभी जिसके सानिध्य की चाहना



करते रहे हैं । मुमुक्षुजन जिसकी कॉपादृष्टि प्राप्त करने के लिये अपनी आयुपूर्ण कर देतें हं । ऐसे धर्मगुरु धर्ममार्तंड, प्रातःस्मरणीय, आचार्य शिरोमणि जनहितार्थ प्रवृत्ति प्रारंभ करने के लिये आचार्यपद से निवृत्त होकर बैठे है ।



स्वामिनारायण भगवान को लगभग २२८ वर्ष हो गये । उस समय वे जिन वस्तुओं का उपयोग किये थे जैसे वस्त्र, मूर्ति, चित्र, पात्र वाहन इत्यादि आज भी संप्रदाय में As it is जैसे हैं वैसे सुरक्षित रहेंगे । इनके दर्शन एवं स्पर्श से भगवान के प्रत्यक्षपना का अनुभव होता है । संप्रदाय के पास चित्रकाम, भरतकाम, काष्ठ की कारीगरी, शस्त्र शास्त्र, इत्यादि का अद्‌भुत नमूना है । ऊँचे प्रकार के साहित्यकी तथा ललितकलाओं की बहुतसारी वस्तुये हैं ।

भगवान श्रीहरि जब मनुष्य के स्म में विचरण कर रहे थे उस समय अनेक प्रसंगो में भक्तों की सेवा भाव से प्रसन्न होकर अपने चरणारविन्द को कपडे पर या कागज पर छाप लगाकर स्मरणार्थ या पूजा के लिये देते थे। इस में भी प्रभु का प्रत्यक्ष भाव झलकता रहता है । जो प्रभु सभी कारणों के कारण हैं वे इस धरा पर अवतार लेकर ४९ वर्ष तक मनुष्य की शरीर धारण करके रहे । इस काल में जो भौतिक सुख के साधन शरीर से सम्बन्धित थे वे प्रसादी के स्म में आज भी विद्यमान है ।

कल्याणकारी ये अमूल्य वस्तु जिसके पास है वह सुयोग्यस्म से रखरखाव नहीं कर सकता, इसलिये इस भगीरथ पुस्मार्थ में लगे हुये प.पू. बडे महाराजश्री को प्रायः लोग समर्पित किये हैं । वचन सिद्ध ऐसे ये महापुस्ष प्रसादी की वस्तुओं की वैज्ञानिक ढंग से रक्षार्थ एक सुंदर आयोजन किये हैं । वह आयोजन इतिहास के स्म में श्री स्वामिनारायण म्युझियम है । जो कोई ऐतिहासिक कबर नहीं है । यह स्थान भव्य भूतकाल से सबन्धित भगवान श्रीहरि की झांकी का दर्शन कराने वाला होगा । इतिहास को सजीव करने वाला क्षण, मानव को आध्यात्मिक अलौकिक शांति का एहसास कराने वाला वातावरण, प्रत्यक्ष प्रभु के दर्शन स्पर्श की अनुभूति कराने वाला स्थानक, आस्था तथा महिमा को बढाने वाला प्रभु से संबन्धित कल्पनाशक्ति द्वारा साक्षात्कार करानेवाला यह स्थान होगा । यह मात्र प्रभु का प्रत्यक्ष कराने वाला स्थानक ही नहीं है बल्कि संस्कार तथा संस्कृति की रक्षा करने वाला संस्कृतालय भी है । इस मकान में जितना पानी लगा है, उससे अधिक हरिभक्तों के प्रस्वेद विंदु वहे हैं । भक्तों की सेवा तथा भावना को साकारस्म देने का भगीरथ कार्य प.पू. बडे महाराजश्री कर रहे हैं ।

श्री स्वामिनारायण भगवान ने जो आज्ञा की है उसी में जीवन की धारा को वहानेवाले ऐसे प.पू. बडे महाराजश्री काल की गति को जैसे रोककर, रातदिन जागरण करके, पंचकर्मेन्दियों को वश में करके, शरीर को तपाकर म्युझियम की आफिस में बैठकर घन्टों तक चर्चा करते समय उनमें दैवत्व का दर्शन होता रहता है ।

आज जब चारो तरफ धर्म को धन्धे के साथ जोड़कर प्रसादी की प्रतिकृति (डुप्लीकेट) बनाकर बेंचा जा रहा है । श्रद्धालुओं की श्रद्धा को लूटा जा रहा है । मुमुक्षुओं की भावना पर कल्पित धर्म का अधिकार जमाया जा रहा है । धर्म के रक्षक संस्कारों की धज्जियां उडा रहे हैं, ठीक इसी परिप्रेक्ष्य में प.पू. बडे महाराजश्री स्वयं भगवान से उत्तरोत्तर परम्परा में प्राप्त प्रसादी की वस्तुओं को सजो कर रखे हैं । इसी तरह अन्यों को भी प्रसादी की वस्तुयें परम्परा से प्राप्त है, लेकिन आज के युग में जहाँ भोजनालय की पवित्रता शुद्ध नहीं रही तो प्रसादी की वस्तुओं का रखरखाव कौन करेगा । आज के विपरीत वातावरण में जब कि कलियुग का आक्रांत चारो तरफ फेंल गया है । भाई भाई लड़-झगड़ कर

अलग हो जाते है । महा प्रभु के प्रसादी की वस्तु यदि कपडा होतो आधा फाडकर बांटा जाता है, यदि चरणारविंद (खटाऊँ) हो तो उसे तोड़कर बांटा जाता है अर्थात् उस प्रसादी की वस्तु को टुकडों में विभक्त कर दिया जाता है । इन वस्तुओं का टुकडा होना शरीर के टुकडे होने के बराबर है । इस स्थिति को देखकर स्वयं पूज्य बडे महाराजश्री करुणार्द्र हो गये और विचार करने लगे कि समाज में अलगता वादी सिद्धांत महाराज के प्रसादी की वस्तुओं पर न पडे, इसलिये भक्तों को परंपरा में प्राप्त प्रसादी की स्तुओं के रखरखाव का एक मुख्य केन्द्र बनाया जाय जिससे सुरक्षित कल्पान्त तक रह सकें और सभी उनके दर्शन का लाभ उठा सकें ।

मंदिरों के निर्माण काल में स्वयं श्रीहरि सेवा करते । इसी परंपरा को ध्यान में रखकर अपने पास जो परम्परा से प्रसादी की वस्तुये प्राप्त की उन्हें समाज को देने के लिये निश्चय कर लिया । यहाँ यह बताने योग्य है कि पू. बडे महाराजश्री के पिताजी प.पू.ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने भी अपनी परम्परा से प्राप्त वस्तुओं को अक्षरभुवन में हरिभक्तों को दर्शनार्थ रखे थे । जिसका आज भी सभी को दर्शन का लाभ मिल रहा है । इसीतरह आज पूज्य बड़े महाराजश्री अपनी परम्परा के प्रसादी की वस्तुओं को लोक कल्याणार्थ समर्पित कर रहे है । क्योंकि वे कोई राजनेता नहीं है तथा स्वार्थ की भावना नहीं है सदा जो परमार्थ सोचता है वही यहकार्य कर सकता है । जीव मात्र का कल्याण उनके हृदय में है । कितने मंदिरो में भी प्रसादी की वस्तुयें है वह संग्रह स्थान के रूप में है । फिर भी यहाँ पर योग्य स्थान समझकर तथा रखरखाव का उत्तम केन्द्र समझकर यह महनीय प्रयास है । इस ऐतिहासिक स्थल पर प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करके लोगों के माहात्म्य में वृद्धि होगी ।

श्रीजी महाराज जिन वस्तुओं का स्पर्श किये हो वे तो प्रसादी की हैं ही लेकिन इशके साथ उनकी शरीर से संबन्धित नख, केश, अस्थि का भी दर्शन होगा । उनके पंचभौतिक देह के अवशेषों का दर्शन करने से परमात्मा के शास्वत होने का नयन गोचर होगा । मनुष्य के और्ध्वदैहिक शरीर प्राप्त होने पर उस शरीर से सम्बन्धित नख, शिख, अस्थि का स्पर्श करने पर स्नान करना होता है, जब कि परमात्मा के नख, सिख, अस्थि का स्पर्श करने से पहले स्नान करके शुद्ध होना आवश्यक है ।

भगवान जब मनुष्य रूप में विचरण कर रहे थे उस समय संस्कृत के प्रकांड पंडित की तरह शिक्षापत्री तथा वचनामृत जैसे ग्रन्थ का निर्माण किये थे । भगवान के हस्ताक्षर वाला पत्र मात्र इस संप्रदाय में पूज्य बडे महाराजश्री के वंश परंपरागत रीति से प्राप्त



है । बदौडा के स्टेट के स्टेम्प पर यह पत्र अंग्रेज अमलदार के हस्ताक्षर से परिपूर्ण है । "न भूतो न भविष्यति" करोडो रुपये देने पर भी यह प्रसादी की दिव्य वस्तु नही मिलेगी । जिसके दर्शन में जीवन की सफलता है । इस पत्र का दर्शन सामान्य व्यक्ति को भी हो सके इस हेतु से पूज्य महाराजश्री गंगा की धारा बहाने के लिये कटिबद्ध हैं । हमें इसमें से जितनी तृषा हो उतना ग्रहण करे लेना चाहिये । श्रीजी महाराज उस समय समाधि प्रकरण चलाये थे । यहाँ बैठा हुआ व्यक्ति अक्षरधाम में जाता और श्रीहरि उसे वहाँ से अलौकिक वस्तु भेटं में देते । उसमें से कुछ वस्तुओं का दर्शन यहाँ होगा । इन प्रसादी की वस्तुओं की महिमा अलौकिक है ।

आज श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं का जो

व्यवसाई करण हुआ है या डुप्लीकेटीकरण हुआ है उसको रोकने का श्री स्वामिनारायण म्युझियम एकमात्र उपाय है । श्री कृष्ण भगवान के रज:कण को प्राप्त करने के लिये ब्रह्मादिक देव भी तरसते रहते हैं । हमें तो घर बैठे भगवान की प्रसादी की वस्तुये प्राप्त हैं । कितने हम बड़ भागी हैं ।

पूर्वाचार्यो ने दीर्घ दृष्टि द्वारा अहमदाबाद में नारायणपुरा विस्तार में करीब ३० करोड की जमीन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर को अर्पित की थी । जिस स्थान पर करीब ३१००० चौ.मी.वार विस्तार में १,७५,००० चो.फूट निर्माण वाली करीब २५ करोड से तैयरा होने वाली, आधुनिक सुविधापूर्ण, वैज्ञानिक ढंग से तैयार होने वाली, नयनरम्य, रंगबिरंगी लाइटिंग,



ओडियो, बोडियो की सुविधा से युक्त, प्रसादी की वस्तुओं को पहचान के लिये परिचयात्मक लिस्ट इतिहास को जागृत करती रहेगी ऐसी यह म्युझियम साकार हो रही है । संशोधन करने वाले तथा साहित्यिक सचिवाले यहाँ आये विना रहेंगे नहीं । कला प्रेमियों की तो भीड लगी रहेगी । प्रत्येक वस्तु लम्बे समय तक तद्स्म में बनी रहे इसके लिये अद्यतन विज्ञान का सहारालिया जा रहा है । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जो प्रसादी की मूल वस्तुयें आज तक पेटारे में थीं वे अब सभी के सामने नयन रम्य बनेगी । भारत देश के भव्य पारम्परिक धरोहर की रक्षा करना हमारा धर्म है ।

यदि हम इसकी रक्षा नही कर सके तो हमारी स्थिति टीपू सुल्तान के तलवार, कोहीनूर हीरा या मयुरासन जैसी वस्तुयें विदेशियों के हाथों में पहुच गई वैसी हमारे साम्प्रदायिक भव्य परम्परा से प्राप्त प्रसादी की वस्तुओं की होगी । उन दिनों सामाजिक कुरिवाजो की बोलबाला थी ठीक उसी समय भगवान श्री स्वामिनारायण के अहिंसा धर्म तथा अन्य कुरिवाजों को रोकने पर तथा पंचवर्तमान के नियमों से आकर्षित होकर महान पंडित, राजा, दरबारी इत्यादि लोग अपना घरबार छोड़कर श्रीजी के आश्रित साधु होगये थे । परिणाम स्वस्म गायकवाड राजा के घर से लेकर सगराम वाघरी के घरतक पदार्पण किये । उनके संत स्त्री-धन से दूर रहते थे । शील तथा सदाचार के आग्रही ऐसे श्री स्वामिनारायण भगवान हिन्दू धर्म के रक्षक, पोषक थे इतना ही नहीं बल्कि मानवजाति में भेदभावना के कट्टर विरोधी थे । वे अपने भक्तों को उपदेश देते कि सामने वाले व्यक्ति को तलवार से नही बल्कि अपने प्रेम से जीतो ।

इस इतिहास को यदि समाज के सामने लाया जाय तो विश्व के मानव के बहुत सारे प्रश्नो का अपने आप निराकरण हो जाय । वे इसलोक में जीवन जीने की रीति सिखाये । आज जब मानव अपने जीवन पथ से भूलकर भटक रहा है तो उसके लिये मार्गदर्शिका जैसी शिक्षापत्री राहत स्म है ।

उन्ही प्रसादी की वस्तुओं का जतन करने के लिये प.पू. बडे महराजश्री मेहनत कर रहे हैं । ये वस्तुयें मात्र संप्रदाय की या मात्र हिन्दुओं की ही नहीं है बल्कि मानवमात्र की है । वीरासत में प्राप्त वस्तुओं का रख रखाव पुरातत्व विभाग (सरकार) भी करता है । आचार्यश्री का यह भगीरथ प्रयाश जनहित के लिये है इससे वर्तमान में बहुत सारी समस्याओं का समाधान भी मिलेगा । दीर्घदृष्टा महापुस्म की यह विचार शरणी सायद लघु विचारवालों को बाद में समझ में आयेगी । इसलिये आज से ही उनके वचन में विश्वास करके यथा संभव सहयोग करके कार्य में सहभागी बनें । क्योंकि

आनेवाली परम्परा के लिये यह एक प्रेरणाकी श्रोत बनेगी ।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस कार्य में सरकार की कोई सहायता की अपेक्षा नहीं की गई है । जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन अयाचकव्रत लिया था, अपने लिये कभी किसी से कुछ मांगा नहीं था, ऐसा निष्किंचन व्रतधारी आचार्यश्री व.मृ. ग.म. २१ वें को श्रीहरि के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि, ... "इस लिये उस निमित्त श्रद्धा विना वालों को कभी प्रेरणा भी नही देना चाहिये ..... लेकिन सरलता से कोई कार्य हो जाय तो ठीक, आग्रह नहीं करना । तथा श्री नरनारायणदेव को अपनी श्रद्धा से खेत, वाडी, गाँव, जागीर दे तो ले लेना लेकिन बलात्कारपूर्वक प्रेरणा मत देना ।" इस कार्य में किसी से मांगने का दुराग्रह नहीं है । मात्र इतना अवश्य है कि सभी आश्रित अनाश्रित इसकार्य में सहायक बनकर आत्मसुख प्राप्त करें । पू. महाराजश्री तो वारंवार कहते हैं कि यहाँ दर्शन करने के लिये कोई आयेगा तोमेरा पुरुषार्थ सफल हो जायेगा । जिसके पास लक्ष्मी है वे यह समझे कि लक्ष्मी तो चंचल है, लेकिन नारायण तो स्थिर हैं । सत्ता या लक्ष्मी कभी किसी की स्थाई नही होती । इसलिये पुण्यकर्म करके धर्म के मार्ग पर चलकर आत्म सुख साध्य करलेना चाहिये । धन का सदुपयोग करने वाला अर्थात् दान लेने वाला तथा दानदेने वाला दोनो अलौकिक आनंद को प्राप्त करते हैं । भारत खंड में, भरत देश में जब ऐसे समर्थ गुरु कोई पुण्यकारक कार्य करते हों तो इसमें सभी को अवश्य कहीं न कहीं सहायक बनना चाहिये । "कफन् को जेब नहीं होता" इस उक्ति की अवगणना चालांक मनुष्य नहीं कर सकता है ।

हम सभी परमकृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना करते हैं कि आचार्यश्री का यह संकल्प जल्दी पूर्ण हो जिससे सभी मानवमात्र को दर्शन् का लाभ मिलने लगे ।

चलो हम भी इसमें से प्रेरणा लें

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के अनन्य निष्ठावाले श्री जयेशभाई रमणलाल सोनी के चि. पुत्र परीन के लग्न के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देने के लिये पधारे थे । उस समय श्री जयेशभाई के आनंद की सीमा न रही । उन्हें ऐसा था कि पुत्र के लग्न में सर्वोपरि श्रीजी महाराज के अपर स्वरूप पधारे तो अच्छा होगा ऐसा ही हुआ । उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि आज महाराजश्री को प्रसन्न करना है । परलोक अब सुधार लेना है । इसलिये बेटे के विवाह प्रसंग पर आई हुई भेंट करीब ३२,५०१-०० प.पू. बड़े महाराजश्रीका दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माणार्थ चरण में भेंट कर दिया ।

क्या इससे हमें प्रेरणा नही मिलती ? व्यवहार में लाखो रुपये लोग खर्च कर देते हैं, लेकिन अपने जीवन का कल्याण किसमें हित है इस पर सदैव ध्यान रखकर प्रयत्न शील रहना चाहिये । ऐसे प्रसंग में से प्रेरणा लेकर इहलोक तथा परलोक दोनो सुधार लेना चाहिये । यही इस प्रसंग का हार्द है ।

- ब्र. पू. राजेश्वरानन्दजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

समस्त सत्संग को सहर्ष ज्ञापित किया जाता है कि सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने संप्रदाय में सर्व प्रथम विश्वप्रसिद्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद का निर्माण करवाया था । यहाँ के मूल गादी संस्थान के नये महंत स्वामी के रूप में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी गुरु स.गु. चितारा स्वामी बलदेवप्रसाददासजी को ता. १४-१-०९ उत्तरायण के शुभ दिन नियुक्त किया है ।

नारायणघाट मंदिर में जोईन्ट महंत स्वामी की नियुक्ति

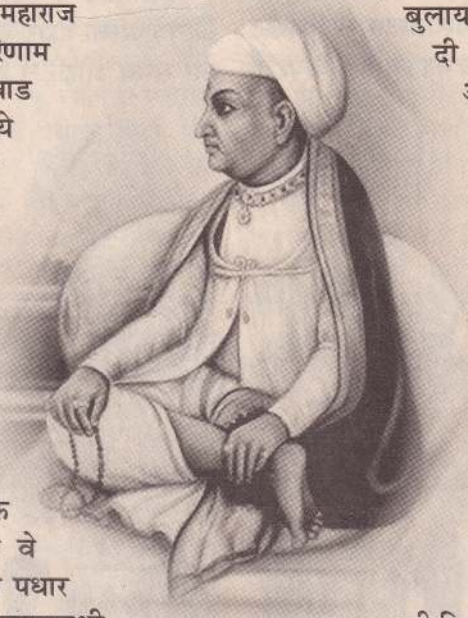
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के वर्तमान महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी के साथ जोईन्ट के पद पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स.गु. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी कोटेश्वर गुरुकुल) की नियुक्ति की है ।

आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने चमत्कार दिखाया था

संकलन : श्री दिनेशभाई के भगत (अहमदाबाद)

आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज महान प्रतापी, ऐश्वर्यवाले तथा बचनसिद्ध थे।

वडोदरा के दीवानजी श्रीजी महाराज को बडोदरा से भगा दिया था। परिणाम स्वस्म बहुत दुःखी हुये थे। गायकवाड सरकारने वार्षिक साठ हजार स्मये का पेंशन निश्चित किया था जिसको उसने बन्द कर दिया। वडोदरा से श्रीजी महाराज अहमदाबाद आगये। दीवानजी के काका रावने पाणीयाद निवासी सत्संगी झूमखराम से अपने भतीजे दीवानजी की पूर्व कहानी सुनाई और उपाय भी पूछा।



झूमखरामभाईने कहा कि जिसका अपराध किया था वे स्वामिनारायण भगवान स्वधाम पधार गये है, लेकिन उनके पुत्र आचार्य महाराजश्री से प्रार्थना कीजिये तो काम हो जायेगा। अयोध्याप्रसादजी महाराजसे खूब प्रार्थना की दीवानजी के घर पदार्पण करवाया, संतो के साथ भोजन के लिये विनय पूर्वक आग्रह करके भोजन कराया। उनके पुत्रने महाराज की सेवा की तथा संतो को वस्त्र ओढाया, इससे आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त हुई जिसके परिणाम स्वस्म गायकवाड सरकारने दीवानजी को वडोदरा बुलाया और उनकी पेन्शन चालू करवा दी। इस तरहकी कस्मा वरसाकर आचार्य महाराजश्रीने दीवानजी का कल्याण किया।

पूज्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने प्रथम स्वप्न में अपने घर में घनश्याम महाराज का दर्शन किया था। वे जब सौराष्ट्र में प्रथमवार आये उस समय भी कारियाणी के वस्ताखाचर के दरबार में स्वप्न मेंदिखाई दिये थे। इससे श्रीजी महाराज के विषय में निश्चिय हो गया कि ये भगवान है।

अयोध्याप्रसादजी महाराज ने वात की कि संवत १९०७ में हम वडताल गये थे वहाँ सभी साधु भक्तों की सभा में हम दोनो भाई तथा आचार्य श्री रघुवीरजीप्रसादजी महाराजश्री काष्ठासन पर बैठे थे, उस समय अंतर्दृष्टि करके हृदय में देखा तो अतिशय तेजोमय मूर्ति श्रीजी महाराज की दिखाई दी।

हरिद्वार मंदिर मे नये महंत स्वामीकी नियुक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स.गु. स्वामी श्यामसुन्दरदासजी गु. शा.स्वा. (मूली) को महंत पद पर नियुक्त किया है। वहाँ जाने वाले यात्रिकों को रहने-खाने-पीने की समुचित व्यवस्था मिलेगी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार, कनखल रोड,
शंकराचार्य चौक, (यू.पी.)
फोन नं. : (०१३३४) २४१४०७

अपने प्रत्येक हरि मंदिरो के कोठारियों को विशेष सूचना

अपने श्री नरनारायणदेव देश गादी के हरिमंदिरों के कोठारियों को प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सूचित किया जाता है कि मंदिर के सिंहासन पर प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित हरि के स्वस्मों के सिवाय किसी भी मूर्ति, चित्र-प्रतिमा, कलेन्डर, पत्रिका इत्यादि सिंहासन पर रखना नहीं। इस सूचना पर कोठारी लोग तथा गाँव के हरिभक्त ध्यान दे। *- महंत स्वामी*

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पदार्पण के विषय में संत-हरिभक्तों को सूचना

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का किसी भी प्रसंग के लिये संत-हरिभक्तों द्वारा पदार्पण की व्यवस्था की जाय तो प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास कार्यक्रम-पदार्पण लिखाकर कालुपुर अहमदाबाद की आफीस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पदार्पण का फोर्म अवश्य भरें, इसका ध्यान सभी को रखना आवश्यक है। नम्र सूचना के साथ। *- महंत स्वामी*

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद मंदिर

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव की मूर्तियों का चमत्कारिक अद्‌भुत इतिहास : अपने शास्त्रों के आधार पर जुलाई २००७ के अंक में यह इतिहास प्रकाशित किया गया था। परंतु श्री नरनारायणदेव के इतिहास जानने की इच्छा से जब मैं स.गु. शा.स्वा. श्री घनश्यामस्वरूपदासजी लिखित भगवान श्री स्वामिनारायण पुस्तक का चिन्तन किया तो बड़ा आनंद हुआ। उसी को ध्यानमें रखकर हरिभक्तों के लिये पुनः प्रसादी के स्थलों का समावेश करने जा रहा हूँ।



जब महाराज मूर्ति प्रतिष्ठा की तैयारी में लगे थे उस समय मूर्ति लेने के लिये संत गये हुए थे, उन्हें आने में बिलम्ब क्यों हो रहा है। पहले की मूर्ति जो लाई गई थी वे छोटी है, उनका क्या किया जाय ? यह चर्चा चल रही थी कि उसी समय ऊंट गाड़ी पर मूर्ति लेकर दरवाजे पर कोई दस्तक दिया। साथ में एक चिठ्ठी भी दिया की आप इसे पहले पढले। उस में लिखा था कि अमावास्या के दिन यहां से ऊँट पर मूर्ति भेंज दी गई है दूसरे दिन प्रातः वहाँ पहुँच जायेगी। आप लोग मूर्ति को लेलीजियेगा। इस पत्र को पढकर सभी संत मूर्ति को उतार लिये और कहे कि आप ऊंट को एक तरफ बांध दो बाद में प्रसाद ग्रहण करके आओ। ऊँट गाड़ी वाले ने कहा कि अभी समय नहीं है, ऐसा कहकर वह दरवाजे के बाहर निकला, सभी की दृष्टि उस पर थी वह बाहर निकलते ही कहाँ अदृश्य हो गया, सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन सभी ने यह निश्चित किया कि श्रीहरि की इच्छा के विना यह संभव नही है। बाद में श्रीहरिने उन मूर्तियों को गौरपूर्वक निरीक्षण किया और अपने हाथों से सहलाया। सभी के सामने कहने लगे कि हमें जैसी मूर्तियां चाहिये थी वे आ गई। महाराज खूब प्रसन्न थे, संत भी उन मूर्तियों को देखकर आनन्दित हो रहे थे। बाद में श्रीहरि उन मूर्तियों को श्वेत वस्त्र पहनाकर प्रातःकाल होते ही ब्राह्मणों द्वारा धान्यादिक वास में रखवा दिये।

दूसरे दिन जो संत डुंगरपुर मूर्ति लेने गये थे वे वापस आगये श्रीजी महाराज का दर्शन करके सभी संत बैठे तो उस समय श्रीहरि ने कहा कि हम जिस प्रकार की मूर्ति चाहते थे वैसी मूर्तियाँ आयी हैं सभी देखकर खूब प्रसन्न है। यह सुनकर संतो ने कहा महाराज ! ये मूर्तियाँ आपकी प्रेरणा एवं इच्छा से यहाँ आई हैं। हमलोग मूर्ति बनाने के लिये खूब प्रयास किये कि जल्दी बन जाय, लेकिन कारीगर के पास समयाभाव के कारण तथा अपने मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा का समय बहुत कम था, इसकी चिन्ता में हम सभी थे कि उसी रात में अर्थात् एकादशी की रात्रि में ये मूर्तियां दिव्यस्वप्न में आकर दर्शन देकर कहने लगे कि अमुकखान की दाहिनी तरफ श्वेत में खोदने पर दो सुंदर मूर्तियाँ निकलेगी। इसके अलांवा अन्य जानकारी देकर मूर्तियां अलक्षित हो गयी। इसी तरह कारीगर को भी स्वप्न में जानकारी हुई थी। इसलिये कारीगर सुबह होते ही हमारे पास आया और रात्रि की सभी घटना बताया, हमने भी उसे बताया, अब हम सभी एकसाथ खेत के मालिक के पास गये और कहे कि आपके खेत में श्री नरनारायणदेव की मूर्तियां है उन्हें निकालने की आज्ञा दीजिये। उस खेत के मालिक ने पूछा कि ये मूर्तियां यहां कैसे आई तब संतोने कहा कि आज की रात्रि में मूर्तियांने दर्शन देकर कहा कि इन मूर्तियों को भगवान श्रीकृष्ण एक समय बदरिकाश्रम से यहाँ लाये थे। उनके मन में ऐसा हुआ था कि इस भरत खंड के अधिपति स्वयं श्री नरनारायणदेव है, इन्हीं से प्रजा को इह लौकिक तथा पार लौकिक सुख साध्य होगा,

क्योंकि भरत खंड की प्रजा के लिये नित्य तप करते रहते है। लेकिन भरत खंड में कही भी श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित नहीं है, इसलिये भरत खंड की प्रजा को दर्शन नहीं होता, इतना ही नहीं यहाँ के लोग उन्हें जानते तक नहीं है। प्रजा उन्हें जानकर भजन-भक्ति करके उनका सुख प्राप्त करें इसलिये श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित होनी चाहिये, परंतु यहाँ के कारीगर श्री नरनारायणदेव को तो कभी देखे नहीं है। यह विचार करके स्वयं श्रीकृष्ण भगवान बदरिकाश्रम से श्री नरनारायणदेव की तैयार मूर्ति अपने साथ भरतखंड में लाये। परंतु मंदिर तैयार जब तक हो तब तक ये मूर्तियां कहाँ रखी जांय यह विचार कर डुंगपुर जहाँ पत्थरों की खान है तथा मूर्तियों के कारीगर है, वे इन मूर्तियों को देखकर दूसरी मूर्ति बनाते रहेंगे और इससे भरत खंड में मूर्तियों का प्रचार प्रसार होगा, इससे सभी श्री नरनारायणदेव को लोग पहचान सकेंगे। बाद में तो भगवान श्रीकृष्ण उन मूर्तियों को लेकर डुंगरपुर गये और कहे कि आप इन मूर्तियों को देखकर दूसरी मूर्ति तैयार करो तथा इन मूर्तियों की तब तक रक्षा करो कि जब तक मंदिरका निर्माण न होजाय। ऐसा कहकर भगवान श्रीकृष्ण द्वारका चले गये।

बाद में भगवान अपने अवतार कार्य पूर्ण करके उद्धव बने हुये यादवों को आपस में युद्ध कराकर नाश किये। बाद में मनुष्य चरित्र करते हुये भगवान श्रीकृष्ण पीपल वृक्ष के नीचे आकर बैठे उस समय मैमेय ऋषि तथा उद्धवजी को ज्ञान देकर विदा किया। अपनी इच्छा से वहेलिया के बाण को स्वधाम गमन का निमित्त बनाकर गोलोक धाम पधारे। उस समय डुंगरपुर का वह कारीगर यह चरित्र जानकर विचार करने लगा कि अब हम इन मूर्तियों का क्यां करेंगे ? उसी समय श्रीकृष्ण भगवान ने उसे स्वप्न दिया कि तुम इन मूर्तियों को किसी अच्छी जगह गाड़ दो। कलियुग में सर्वावतारी श्रीहरि प्रगट होंगे, वे श्रीनगर (अहमदाबाद) में मंदिर बनवाकर उसी में प्रतिष्ठित करेंगे। यह सुनकर वह कारीगर उन मूर्तियों को जमीन में गाड़दिया था। वे मूर्तियां ही हमे स्वप्न में दर्शन देकर स्थान भी बताई है, मेरे साथ आप चलो।

उस समय वह किसान वहाँ आया, मूर्तियों को बाहर निकाला गया स्नान विधि से शुद्ध करके उन मूर्तियों को यथाशीघ्र अहमदाबाद भेंजने का विचार किया जा रहा था कि इतने में एक ऊंट गाड़ी वाला आकर कहा कि हमें अहमदाबाद जाना है और मैं प्रातः होने से पूर्ण अहमदाबाद पहुँचा देंगे। ऐसा ही किया गया। मूर्तियों को उस ऊँट गाड़ी पर व्यवस्थित बांधकर प्रेषित कर दिया गया। जो आप सभी को समय से पूर्व मिल गई होगी। सभी कहने लगे कि वह ऊँटवाला तो आधी रात को ही मूर्ति लेकर आ गया था। मूर्तियों को उतारकर चला गया। इतना ही नहीं वह जब ऊँट गाड़ी के साथ मंदिर से बाहर निकला तो सभी के देखते अदृश्य हो गया। यह सभी की इच्छा से हुआ है इसमें शंका का कहीं स्थान नहीं है।

भक्तजन ! ऐसे नरनारायणदेव के चरणों में हम सभी की दृढ निष्ठा होगी तो अवश्य कल्याण होगा।

अपने आगामी उत्सव

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव माघ वद-५ ता. १४-२-०९

मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव माघ वद-६ ता. १५-२-०९

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-२ ता. २६-२-०९

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-३ ता. २८-२-०९

सापावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-४ ता. २८-२-०९

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-५ ता. १-३-०९

खाण श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-७ ता. ७-३-०९

एप्रोच-बापुनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन शुल्क-८ ता. ८-३-०९

श्री नरनारायणदेव जयंती फूल दोलोत्सव फाल्गुन शुक्ल १५/१ ता. ११-३-०९ दोपहर १२-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से अहमदाबाद मंदिर में धूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

जेतलपुरधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव फाल्गुन वद-८ ता. १९-३-०९

नये व्रत-उत्सव के निर्णय का प्रकाशन

समस्त हरिभक्तों को ज्ञात हो कि श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की तरफ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संवत् २०६५-६६ का अपना व्रत-उत्सव प्रकाशित हो गया है। जो अपने प्रत्येक शिखरी मंदिरों के साहित्य केन्द्र से मिल सकता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सम्पूर्ण जिंदगी लाली के अनुसार

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

महाराज ! एक उदाहरण सुनाऊँ ? ब्रह्मानंद स्वामी की प्रकृति हास्य की थी । स्वामी बहुत सारे सत्य प्रस्तुत करते फिर भी उस में हास्य तो अवश्य होता, स्वामी कहते हैं कि महाराज ! संसार में एक कहावत है कि जगत के जीवका जीवन लाली की तरह वीत जाता है । महाराज कहते हैं स्वामी ! ऐसा नही है । हम ऐसी वात कभी सुने नहीं है । आप इसे विस्तारपूर्वक सुनाइये । ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा सुनिये । आप न सुने हों और मुझे सुनाना हो इससे अधिक आनंद क्या हो सकता है ।

यह दृष्टांत समझने लायक है । एक गांव में पति-पत्नी रहते थे । उनको संतान में मात्र पुत्री थी । पुत्री का नाम लाली थां । क्या लाली को लाड लडावे ? इतना लाली को प्रेम करते कि खिलाने, पिलाने, खेलाने में सारा समय बीत जाता था । महंगा से महंगा कपड़ा पहनाते, एक ही तो बेटी थी । एक दिन लाली के लिये कपड़ा खरीदने गये दो सौ स्मये कोई काट लिया । उन्हें दुःख नहीं हुआ क्योंकी लाली के लिये स्मये थे । कोई भी काम करते तो लाली के लिये । समय वीतते देर नहीं हुई । लाली बड़ी हो गयी । अब वे दोनो बेटी की शादी के लिये सोचने लगे, खूब धूमधाम से विवाह करेंगे । एक बड़ी पेटी ले आये । उसमें जो भी लाली के लिये सामान लाते सजाकर रखते जाते । गहना-गुरिया-कपड़ा अलंकार की अन्य सामान सभी रखते और कहते कि शादी में यह सब लाली को भेंट में देगे ।

मनुष्य कुछ सोचता है, ईश्वर उसके बिपरीत करता है । हुआ ऐसा कि किसी अकस्मात में लाली की मृत्यु हो गई । माता-पिता रात-दिन रोते रहते । उसकी हर पल-पल पर याद करते, कितनी अच्छी थी, कितनी प्यारी थी, उसके लिये ये सभी सामान खरीदे थे ।

अभी वह युवानी में पैर रखी ही थी कि काल कवलित हो गयी । वह बहुत पवित्रात्माथी ऐसा कहकर सभी उन्हें समझाने आते, वह तो स्वर्ग में गई है आप लोग चिंता क्यों करते हैं, वहां वह सुखी है । लालीकी मां पूछती, मेरी लाली वहाँ सुखी होगी ? अरे, आनंद करती होगी । वहाँ किसी प्रकार का दुःख नहीं, वहाँ सभी वस्तु सस्ती एवं मुफत मिलती है ।

एक दिन कोई इस परिस्थिति का जानकार ठग आया । आप कौन हैं ? भाई ! मैं चारो तरफ घूमता रहता हूँ । धरती पर तथा स्वर्ग में भी जाना होता है । आप स्वर्ग में भी जाते हैं ? हाँ, तो मेरी लाली भी स्वर्ग में गई है । हाँ, मुझे पता है, वही मुझे यहा भेजी है । अच्छा, लालीने आपको यहाँ भेंजा है । वह यहां का पतानहीं दी होती तो यहाँ कैसे पहुंचते ? कहिये मेरी लाली कैसी है, कुछ संदेश भेंजी है क्या ? उसे वहाँ कोई तकलीफ तो नहीं है । खाने-पीने की कोई परेशानी नहीं । लेकिन स्वर्ग में यहाँ जैसा सोने का अलंकार नहीं मिलता । इसलिये मोटे-मोटे सोने के अलंकार मेरी मां बनवाकर रखी है, उसे आप जाकर ले आइये । उसी को लेने मैं आया हूं । यहसुनते माँ तो आनंदित हो गई । भीतर से लाकर सोने की पेटी जो बेटी की शादी के लिये सभी अलंकार बनवाई थी सभी देदी । यह सब मेरी बेटी को दे देना । वह ठग सभी जेवरात लेकर ज्यौं ही बाहर निकला होगा कि थोड़ी देर में पति घर आया । पत्नीको खुश देखकर पूछा कि क्यों आज बहुत प्रसन्न हो, तब पत्नीने सभी हाल कह सुनाया । वह सुनते ही कहा अरे रे... तूंने तो गजब कर दिया, ऐसा कहीं होता है कि स्वर्ग से कोई आवे ! जो गया वह वापस नहीं आता । तूं पागल हो गई है । कोई बात नहीं वह पेटी लाली के लिये गई ।

लेकिन उस भाई को ऐसा हुआ कि ठग को हम पकड़लेंगे । नजदीक में ही कहीं होगा । यह समझकर वह घोड़ा लेकर उसका पीछा किया । गाँव के बाहर जाते हुये ठग को पकड़ लिया । लेकिन वह ठग एक पेड़ पर चढ गया । नीचे से चिल्लाते हुए कहा तूं नीचे उतर । पत्नी को ठग कर आया है । अब मेरे हाथ से बच नहीं सकता । ऐसा कहकर पेड़पर चढता है और वह ठग उसी पेड़ की डाली से कूदकर घोड़े पर आगया । जब तक पहलाभाई नीचे उतरे तब तक तो वह ठग माल सामान के साथ घुड़सवारी करके घोड़ा भी साथ लेकर निकल गया । निराश होकर वह जब घर गया तो पत्नीने पूछा कि क्यों ठग पकड़ाया नहीं, तो घोड़ा कहाँ गया ? तब उसने कहा जहाँ पेटी भरा हुआ माल सामान सभी गया वहीं (लाली के यहाँ) घोड़ा भी गया ।

यह दृष्टांत ब्रह्मानंद स्वामीने श्रीजी महाराज को सुनाया । अब इसका सिद्धान्त सुनाते हुए स्वामीने कहा कि हे महाराज ! संसारी जीव का सर्वस्व लाली कीतरह सब कुछ चला जाता है । सम्पूर्ण जिंदगी विचारकरना चाहिये क्या खोया, क्या पाया । संपत्ति का उपयोग हो रहा है या दुस्मयोग हो रहा है इसका सतत ध्यान रखना चाहिये । संपत्ति ईश्वर की कृपा से मिलती है । इसलिये कुटुम्ब के भरण पोषण के साथ सत्कर्म, परोपकार तथा भगवान के लिये उपयोग करना श्रेयष्कर है । परंतु जो

संपत्ति का उपयोग मौज-मस्ती सौख के लिये तथा व्यसन में व्यय करते है, उसे दुरुपयोग कहा जाता है । जब जिंदगी में भजन न हो, सत्संग न हो तो समय का दुरुपयोग कहा जायेगा । इससे यह सिद्ध हो गया कि धन संपत्ति लाली के लिये एकत्रित जैसे बह गयी, समय का दुरुपयोग व्यसन में घोड़े की तरह चला गया । इसलिये इन दोनों रहस्यों पर सतत ध्यान देने लायक है ।

इस प्रकार दृष्टांत के साथ सिद्धांत सुनकर महाराज खूब प्रसन्न हुये ।

मित्रों ! आप सभी को इस कहानी से कुछ अवश्य रहस्य ख्याल आया होगा । इसलिये सदा भगवान की भजन-भक्ति सत्संग में तन, मन, धन लगाना चाहिये ।

●

माफी किसे मिले ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

कहानी किसे अच्छी नहीं लगती ? सभी को अच्छी लगती है । उसमें भी बालको को तो और अच्छी लगती है । भोजन करना भी भूल जाते हैं । आज एक कहानी सुनाते है । ध्यानपूर्वक सुनना, जिंदगीभर याद रहेगी । एक गुरु थे । वे बड़े विद्वान थे । उन्हें विचार आया कि हमें जंगल में कोई मिलने नहीं आता है । जंगल में आतेसमय सभी डरते हैं । इसलिये हम स्वयं जंगल से नगर में जाकर रहे, वहाँ अपने ज्ञान का उपयोग शिष्यों में करेंगे । जिससे सभी भगवान की भजन करें और सुखी हों ।

ऐसे उत्तम विचार के साथ अपने शिष्य के पास नगर में गये । शिष्य के आनंद की सीमा न रही । मेरे गुरु मेरे घर आये । गुरुने अपना विचार व्यक्त किया । यहां लोगो में ज्ञान-भक्ति भजन का प्रचार हो इसके लिये आया हूं । शिष्य गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य किया और नगर के राजा को यह वात कही । राजा खूब भक्तिवाला था, इसलिये नगर के मुख्य स्थान पर सत्संग का आयोजन किया गया । राजा उन गुरुजी से मंत्र दीक्षा लेकर शिष्य हो गया । राजा की दीक्षा के बाद सभी नगरजन भी गुरुमंत्र ले लिये । गुरु प्रसन्न होकर दूसरे नगर में धर्मप्रचार करने के लिये जाते हैं ।

इधर राजा अपने नगर में प्रजा के साथ गुरुभाई की तरह वर्तन करता है । क्योंकि सभी एक गुरु के शिष्य थे । परंतु प्रजा राजा का गैरफांयदा उठाने लगी । जब राजा प्रजासे कर लेने के लिये अपने कर्मचारियों को भेंजता है, उस समय प्रजा जनोंने राजा का गुरुभाई कहकर कर नहीं दिया । प्रजा राजा से कपट जैसा व्यवहार किया, परिणाम स्वरुप राज्य व्यवस्था विगड़ने लगी । राज्य पर आर्थिक बोझ बढने लगा । राजा को चिन्ता हुई, वे विचार करने लगे कि इसका समाधान मात्र गुरुजी ही कर सकते हैं । राजा गुरुजी के पास संदेश भेंजे । गुरुजी नगर में आये । सभी वात जानकर राजा से कहें कि चिंता की वात नहीं है । जो सच्चे गुरुभाई होंगे उनका कर नहीं लेगे, जो झूठे होंगे उनसे लिया जायेगा । लेकिन सच्चे और झूठे की पहचान कैसे होगी । गुरुजीने युक्ति खोजली । राजा को विमार घोषित किया गया और दूसरी तरफ गुरुजी बहुत बड़ी नगरजनों की सभा की । अपने राजा भयंकर विमार है, आपलोग गुरुभाई है, इस समय आप सभी के द्वारा उनका उपचार करना चाहिये । गुरुजी आप जैसा कहें हम वैसा करेंगे । गुरुजीने कहा कि आप सभी को अपनी कानी (कनिष्ठिका) अंगुली काटकर देना है । वैद्यने कहा है कि प्रतिदिन पांच कनिष्ठिका अंगुली को तेल में पकाकर राजा की शरीर का मालिस कीजिये । इसलिये आप सभी अभी लाईन में कनिष्ठिका अंगुली कटवाने के लिये खड़े होजाईये । लेकिन कोई खड़ा नहीं हुआ, परंतु जो यथार्थरुप से गरीब थे उनके मन में हुआ कि गुरुभाई का संबन्ध रखकर ही राजाने हमारे कर को माफ किया है । इसलिये हम सुखी हुये है । तो राजा केलिये क्यानहीं हो सकता ? वे अपनी कनिष्ठिका अंगुली देने के लिये तैयार हो गये ।

तब गुरुजीने कहा कि राजा साहब आप अब इन दश लोगों का ऋण मांफ कीजिये, अन्य सभी का ऋण पूरा वशूल कीजिये । राजा की समस्या का समाधान हो गया ।

मित्रों ! आप सभी इस कहानी को पढे होंगे इसमें क्या बोध समाया हुआ है, आप सभी को ख्याल आगया होगा । सभी लोग स्वयं को सच्चा भक्त मानते हैं । इसके साथ भगवान से अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिये नाना प्रकार की मांग करते हैं । परंतु भगवान जन्म, मरण, काल, कर्म, प्रारब्ध को माफ नहीं करते । लेकिन जो भक्त भगवान के लिये मस्तक देने को तैयार होते हैं उनके सकल प्रारब्ध कर्म कोमाफ कर देते हैं । इसीलिये ब्रह्मानंद स्वामी ने लिखा है कि -

ब्रह्मानंद कहे रे एवा हरिजननी बलिहारी ।
मस्तक जाता रे न मेले टेक विसारी ॥

सत्संग सेतु पुस्तक का विमोचन
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूल संप्रदाय तथा श्री नरनारायणदेव की अडिग निष्ठावाले श्री स्वामिनारायण मासिक में नियमित लेख लिखने वाले श्री गोरधनभाई सीतापरा द्वारा लिखित सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की लीला चरित्र एवं महिमा का अद्‌भुत वर्णन वाली "सत्संग सेतु" नामक वाली पुस्तक का प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से उत्तरायण के दिन विमोचन किया गया । इस पुस्तक को सभी हरिभक्त अपने घर अवश्य रखें और वाचन, मनन, निदिध्यान करें ।

प्राप्ति स्थान : साहित्य केन्द्र, श्री स्वामिनारायण मदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ।

भक्तिसुधा

सर्वोपरि छपैयाधाम स्पेश्यल ट्रेन द्वारा दिव्य यात्रा

- सांख्ययोगी मंजुबा, भारतीबा गुरु गोदावरीबा (हवेली अमदावाद)

श्री स्वामिनारायण संप्रादाय में २३० वर्ष के भीतर सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री नरनारायणदेव गादी की समस्त महिला वर्ग की धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाजी के संकल्प तथा आशीर्वाद से सभी महिला वर्ग सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रागट्य भूमि छपैयाधाम की यात्रा का लाभ मिले इस हेतु से श्री स्वामिनारायण स्पेश्यल ट्रेन का आयोजन प.पू. गादीवालाजी की हवेली द्वारा किया गया था ।

इस दिव्य यात्रा में कुल ११०० महिलाओं ने भाग लिया था । ता. १२-१-०९ को दोपहर में३ बजे प्रत्येक यात्रिक महिलायें कालूपुर स्टेशन पर पहुँच गई । उस समय सेवाकार्य में लगे हुए भाईयों ने श्री नरनारायणदेव तथा पू. महाराजश्री के पोस्टरों से तथा डेकोरेशन सामग्री से ट्रेन को अद्‌भुत अलंकृत किया था । ठीक ५ बजे सायंकाल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री रेलवे स्टेशन पर दर्शन-आशीर्वाद देने पधारे उस समय कार्य सेवकों द्वारा बैन्ड बाजा की व्यवस्था की गई थी जिससे महाराजश्री का स्वागत किया गया था । सम्पूर्ण रेलवे स्टेशन स्वामिनारायण के महामंत्र से गूंज उठा था । इसके बाद श्री स्वामिनारायण स्पेश्यल ट्रेन को नीली झंडी दिखाकर प.पू. लालजी महाराजश्री ने प्रस्थान करवाया था । इन महिलाओं की अहोभाग्य की स्वयं बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के रूप में लालजी महाराजश्रीने नीली झन्डी दिखाई । इसके बाद कार्य सेवकों द्वारा प्रत्येक महिलाकों पहचान पत्र देकर बैठने की सुन्दर व्यवस्था की गई थी । सायंकाल ५-३० बजे रेलवे स्टेशन से छपैयाधाम जाने के लिये ट्रेन प्रस्थान की । सायंकाल का भोजन ट्रेन में ही दिया गया था । दोनों टाईम भोजन की व्यवस्था तथा दोनो टाईम चाय की व्यवस्था की गई थी । प्रत्येक को सीट पर ही भोजन सामग्री पहुँचा दी जाती थी । ऐसी व्यवस्था देखकर बहनों को हुआ कि इतनी सुंदर व्यवस्था तो हम लोग घर भी नही करपाती है । ऐसी सुन्दर व्यवस्था संचालको ने ट्रेन में की थी । सां.यो. बहने तथा गृहस्थ बहने सम्पूर्णदिन कीर्तन भजन करती रहीं । सायंकाल आरती धुन, नियम, चेष्टा सभी समय के अनुसार कर रही थी । इससे ट्रेन में भी भगवान का चिंतन-स्मरण बना रहता था । प.पू. गादीवालाजीने यह संकल्प किया था कि यात्रा में आनेवाली प्रत्येक बहनों को ब्रह्मानंद स्वामी रचित कीर्तनावली दी जाय । ब्रह्मानंद स्वामी के कीर्तन के सौ पद जो छ महीने तक गाये उसे महाराज प्रत्यक्ष दर्शन देंगे । इसलिये प्रत्येक बहनो को पू. गादीवालाजीके आशीर्वाद रूप में ब्रह्मानंद स्वामी के सौ पद की कीर्तनावली दी गई थी । ट्रेन ता. १४-१-०९ को प्रातः ४-३० बजे अयोध्या पहुंचगई । आज का दिन परम पवित्र उत्तरायण का दिन था । अयोध्या के स्टेशन पर प्रत्येक बहेन ट्रेन से उतरकर सभी एक साथ प्रातः काल मंगलमय वेला में श्री स्वामिनारायण की धुन बोलती हुई मंदिर में आई । सभी वहाँ मंगला आरती का दर्शन की । बाद में सभी के नास्ता की व्यवस्था वहाँ की गई थी । सभी प्रसाद ग्रहण करके एक साथ पैदल चलकर राम जन्मभूमि दर्शन करने गई । वहाँ से कनक भवन तथा हनुमान गढी का दर्शन करके सरयू में स्नान करने गई । साथ में कार्य सेवक भी थे । बहनो को कोई तकलीफ न हो इसलिये उन्हें साथ रखा गया था लेकिन जब पू. गादीवाला का आशीर्वाद हो तो तकलीफ क्यों आयेगी। स्नान करके सभी बहने अयोध्या रेलवे स्टेशन पर पहुँची, उस समय दोपहर का एक बज रहा था, सभी को भोजन दिया गया वहाँ से ट्रेन प्रस्थान की और सांयकाल ४-०० बजे छपैयाधाम रेलवे स्टेशन पहुंच गये । छपैयाधाम पहुँचते ही सभी बहनों के मन में घनश्याममहाराज के दर्शन की पिपासा उत्तरोत्तर बढने लगी थी । कब और कैसे, कितनी जल्दी दर्शन का लाभ मिले । सभी बहनें जयजय कार श्री स्वामिनारायण मंत्र की बोलती हुई ट्रेन से नीचे उतरी बाहर गाड़ी की व्यवस्था की गई थी । छपैया मंदिर के महंत स्वामी तथा अन्य संत घनश्याम महाराज को साथ लेकर आये थे ।

सभी छपैया मंदिर में पहुंचे । किसी को किसी प्रकार की कोई तकलीफ न हो ऐसी व्यवस्था की गई थी । प्रत्येक यात्रिक महिलाये अपना सामान अपने निवास स्थान पर रखकर उन्मुक्त होकर जैसे अपने घर में पहुँच गई हो, इस तरह सभी आनंद की अनुभूति करते हुये महाराज की दिव्य झांकी का दर्शन सुख लिया । यहाँ रात्रि में प्रत्येक सां.यो. बहने तथा गृहस्थ बहने दोनो मिलकर नियम चेष्टा करके सुंदर रास खेली थी । दूसरे दिन मंगला तथा श्रृंगार आरती का दर्शन करके सां.यो. बहने तथा यात्रिक बहने दोनो साथ में महाप्रभु जहाँ जहाँ अपने बाल सखाओ के साथ लीला किये के उन स्थलों के दर्शनार्थ गई । एक साथ एक हजार बहने जब प्रसादी के स्थलों पर दर्शनार्थ खेतों के मार्ग से जा रही थी उस समय श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन बोलती जा रही थी इससे वहाँ का सारावातावरण

दीव्य बन गया था इतना ही नही वहाँ की माताये बहने अपने घरो से बाहर आकर उस दीव्यता का अनुभव करने लगी कि मानो घनश्याम महाराज का आज ही प्रागट्य हुआ हो और दर्शनार्थ वे भी बाहर उमट पड़ी थी । प्रत्येक प्रसादी के स्थल को बड़ी श्रद्धा से दर्शन करती । यहाँ भी कार्य सेवक साथ में रहते जिससे कोई परेशानी न हो । दोपहर १२-०० बजे प्रसादी के स्थलों का दर्शन करके मंदिर वापस आगये । मध्याह्न भोजन सभी ने किया । जिसके आशीर्वाद से यह यात्रा सफल हो रही थी ऐसी आनंद की सागर प.पू. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाजी तथा घनश्याम महाराज के साक्षात् स्वरूप प.पू. लालजी महाराज एवं श्री राजा सायंकाल ४-०० बजे पधारने वाली थी, इसलिये सां.यो. बहने तथा यात्रिक बहने भगवान की जयनाद करती हुई एवं कीर्तन गाती हुई स्वागतार्थ गई । प.पू. गादीवालाजी पधारी उस समय जयनाद के साथ सभी महिलाओं ने पुष्पवृष्टि की थी । गादीवालाजी के आगमन से सारा वातावरण खुशनुमा हो गया । सभी बहने आनंद में आकर नाचने लगी । रास गरबा सभी एक साथ मिलकर करने लगी । बाद में गाजे बाजे के साथ पू. गादीवाला का स्वागत करके मंदिर में लाया गया, वहाँ पर प्रथम घनश्याम महाराज का दर्शन की । प.पू. गादीवालाजी की उपस्थिति में प्रत्येक बहनोंने सत्संग का लाभ लिया । सां.यो. बहनो ने सुंदर प्रवचन किया । संध्या आरती का समय होते सभी आरती का दर्शन करने गई । सायंकाल का भोजन लेकर करीब ९ बजे से ११ बजे तक सभी बहनोने गादीवाला की उपस्थिति में सत्संग सभा का लाभ लिया । उसमें भी अहमदाबाद तथा बाहर की सां.यो. बहनोने सुंदर प्रवचन किया । इस सभा का आनंद जिन्हे मिला वे यही सोचती थी कि आज पू. गादीवाला के सानिध्य में जो लाभ मिल रहा है वह रात्रि छ महिने की हो जाती तो अच्छा रहता । अंत में ११-०० बजे पू. गादीवालाजी अपनी अमृतमयी वाणी से सभी को तृप्त कर दीं । सभी बहनें गादीवालाजी के मुख से आशीर्वाद सुनकर इतनी खुश हो गई कि तालियों की नाद से सारे वातावरण को भर दिया । बाद में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के जयनाद से सभा की पूर्णाहुति करके सभी अपने निवास स्थान पर गई । तीसरे दिन प्रातः प.पू. गादीवालाजी के सानिध्य में यात्रिक बहनोने महापूजा का दिव्य लाभ लिया था । महापूजा पूर्ण होने पर सभी नास्ता करके सभा मंडप में नव बजे आकर प.पू. गादीवालाजी के चरण स्पर्श का सभी बहनोने लाभ लिया था ।

दोपहर में एक साथ सभी भोजन करके १ बजे छपैया रेलवे स्टेशन जाने के लिये रवाना हो गई । सायंकाल ४-०० बजे स्पेश्यल ट्रेन अहमदाबाद के लिये छपैया स्टेशन से प्रस्थान हुई । सायंकालीन आरती, चेष्टा, नियम इत्यादि ट्रेन में सभी ने सम्पन्न किया । सायंकाल का भोजन ट्रेन में संपन्न हुआ । दूसरे दिन स्नानादिक क्रिया करके सभी ने नास्ता किया । परंतु उस दिन दिव्य आनंद से आनंदित बहने एकाएक उदास हो गई । सभी सां.यो. बहनो के डिब्बे में आकर कहने लगी कि -

"पाछी वाळो रे पाछी वाळो रे ।
आ ट्रेन छपैया पाछी वाडो रे ॥"

सभी बहने धुन-कीर्तन करते हुये अहमदाद आ रही थी लेकिन उनका मन छपैया धाम की तरफ था । दिन-रात्रि मात्र प्रभु का स्मरण होता रहा । ता. १८-१-०९ के दिन दोपहर में ११-०० बजे अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर ट्रेन आ गई । सभी आत्मीय जनों से मिलने का उतना आनंद नही था जितना यात्रिक बहनों से विछुड़ने का दुःख था । यहाँ से सभी अपने स्वस्थान के लिये प्रस्थान किये ।

इस यात्रा का संस्मरण करते हुये सभी एक ही बात कर रही थी कि चाहे जितने रुपये खर्च किये जाय, ऐसी ट्रेन में सफर की जाय लेकिन इतना आनंद अन्य यात्रा में मिलना संभव नहीं है । इसे कभी भूला नही जा सकता है ।

•

कल्याण का वचन

- कोकिलाबहन जयंतीभाई ठक्कर (कलोली)

सारंगपुर में लखा नाम वाला एक पटेल रहता था । दिन भर खेत में काम करता था । खूब प्रामाणिक, धार्मिक तथा विवेकी था । परमात्मा में अपार श्रद्धा थी, इसके साथ मां-बाप को भी अधिक प्रेम करता था । मां-बाप की सेवा को धर्म मानता था । समय वीतते बाप स्वर्ग सिधार गये । वृद्धा माता बची रही, जिसकी सेवा को वह अपना व्रत मान लिया था ।

उसी अन्तराल में एक वार श्री स्वामिनारायण भगवान सारंगपुर पधारे । लखा को हुआ कि जब भगवान स्वयं इस गांव में पधारे हैं तो क्यों न मां को भी दर्शन करादूँ । लाखा पटेल जीवा खाचर से जाकर कहा तो जीवा खाचर बहुत प्रसन्न हुए वे तुरंत ही हाँ कर दिये ।

लखा के आनंद की सीमा न रही । वह घर आया और अपनी मां से कहा, मां भी प्रभु के दर्शन को तैयार हो गयी । अब दोनो मां-बेटे जीवा खाचर के दरबार में आये । लखा अपनी मां को प्रभु के चरण में बैठाकर विन्ती करने लगा । महाराज ! यह मेरी वृद्धा मां है, दर्शन करने आई हैं । आज इसका जन्म सफल हो गया । महाराज ! कृपा करके आप इसे नियम धरा दीजिये जिससे इसका कल्याण हो जाय ।

कितना निरभिमानी वह था, अकिंचन था, जो अपने लिये नहीं अपनी पत्नी या अपने बच्चों के लियेनहीं बल्कि मां के लिये कल्याण मांगा । महाराज खूब प्रसन्न हो गये और आशीर्वाद दिये कि मांजी आपका कल्याण होगा । प्रभु का वचन सत्य हुआ तीन दिन तक मांजी बहुत अच्छी

थी । प्रभु के उसी स्वरूप का दर्शन करती रही । चौथे दिन एक ऐसा चमत्कार हुआ कि प्रभु का दर्शन हो गया और दर्शन करके कहने लगी कि मेरा बेटा जिसके दर्शन के लिये ले गया था वे महाप्रभु तो आज प्रत्यक्ष यहाँ बिराजमान हो गये हैं । दर्शन करके खूब प्रसन्न हो गई ।

प्रातः काल का समय था । चारो तरफ नीरव शांति थी । वृद्धा माता अकेले बैठी थी । वृद्धा मां से भगवान ने कहा कि अक्षरधाम में आना है न ? आजही तैयार रहियेगा, मैं लेने आऊँगा । मांजी तो आश्चर्य में हो गई । बाद में भगवान का दूसरी बार दर्शन हुआ, अब तो उनकी श्रद्धा और भी दृढ हो गई । आनंद के आंसू बहने लगे । हम गरीब के यहाँ भगवान ! ऐसा विचार करके अपने बेटे को बुलाई ।

आवाज सुनकर बेटा दौड़कर आ गया, उससे कहने लगीं कि बेटा तूं तो मेरी जिंदगी को तार दिया । मेरे ऋण से तूं मुक्त हो गया । भगवान आज दर्शन देकर कहे कि अक्षरधाम में आना हो तो तैयार रहना, आज ही लेने हम आयेंगे । उस दिन तूं दर्शन के लिये ले गया था न ? वे स्वयं आये थे । बेटा तुम्हारे जैसे बेटे को जन्म देकर मैं धन्य हो गई । आज तूं खेत में नही जाना । भगवान मुझे लेने आयेंगे । यह सुनकर बेटे की आंखे भर आई । बाद में नारायण की धून प्रारंभ करा दिया । अगल बगल के लोग वहाँ पहुँच आये । थोड़ीदेर में ही यह चमत्कार हुआ । चारो तरफ प्रकाश फैलने लगा तो सभी को यह भास होने लगा कि श्रीजी महाराज पधारे हैं । मांजी महाराज का दर्शन करी, पश्चात् महाराज उन्हें लेकर अक्षरधाम गये । यह सभी लीला का वहाँ के लोग प्रत्यक्ष दर्शन किये । यह दिन आनंद का माना जाय या दुःख का, लेकिन सारंगपुर वासीयों को यह स्पष्ट तो हो ही गया ही महाराज ने जोमांजी को वचन दिया था, वह पूरा किया ।

•

सभी जीवों का एक साथ उद्धार करना है

- नयना विनोदभाई मोदी (अहमदाबाद)

पुरुषोत्तमप्रकाश के प्रकरण ४५ वें में सद्गुरु श्री निष्कुलानंद स्वामीने महाराज का अभिगम बड़े सुंदर ढंग से वर्णित किया है ।

वर्णी वर्णी शुं वर्णवुं आ समानी वात,
जीव जगत ना उपर आज अमे छीये रणियात,
जाणिये आखी जगत ने लई जाईये अमारे धाम,
केडे न राखिये कोईने अम हैये छे घडी हाम,
ते सारु भूमि ऊपरे राख्या छे सुखना समाज,
अमारा अंग संगनी वस्तु राखी छे जीवना कल्याण काज,
फरी फरी फेरो पड़े तेवुं करवुं नथी आ वार,
सव जीवनो सामटो आज करवो छे उद्धार.

महाराज जीव मात्र का कल्याण करने के लिये अक्षरधाम से इस जीवलोक में पधारे । श्रीहरि के हृदय का निष्कुलानंद स्वामीने वर्णन किया है । जीवमात्र को अपने धाम में लेजाने की कितनी चाहना है । इस तरह के भाव यहाँ व्यक्त है ।

इसी के लिये महाराज इस भूमि पर सुख का समाज रखे है सुख का समा क्या है ? नीचे निर्दिष्ट है -

१. आचार्यश्री / धर्मकुळ : प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन धीर-गम्भीर वाणी, सारगर्भित वाणी से वर्णनीय उपदेश द्वारा समग्र सत्संग समाज के सत्संगी मात्र को मिलता रहता है । जिससे महाराज में प्रेम का भाव सदाबना रहता है ।

• प.पु.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा अहर्निस धर्म प्रचार तथा सत्संग वृद्धि द्वारा साम्प्रयदायिक कार्य में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही हैं ।

• प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री द्वारा बाल सत्संगियों में एक अलौकिक प्रेरणा दी जा रही है, जिसमें प्रेरणादायी कथा कहानी कहकर सत्संगी बालकों में जिसमें प्रेरणादायी कथा कहानी कहकर सत्संगी बालको में मित्रता का भाव बढ रहा है, इससे भी सत्संग में वृद्धि हो रही है ।

"अमारा अंग अंगनी वस्तु राखी छे जीवना कल्याण काज....."

श्रीहरि के अपर स्वरूप ऐसे बड़े महाराजश्री स.गु. निष्कुलानंद स्वामी की पंक्तियों को श्री स्वामिनारायण म्युझियम द्वारा चरितार्थ कर रहे हैं ।

• महिला वर्ग भी कितनी भाग्यशाली हैं । जो श्रीहरिने बहनों के लिये गुरु के रूप में पू. अ.सौ. गादीवाला का तथा पूज्य मातुश्रीका सानिंध्य दिया है ।

घर के प्रत्येक नर-नारी, आबालवृद्ध स्त्री पुरुष, सभी अपने उम्र के अनुसार जैसा चाहे वैसा गुरु बना सकती है, ऐसी श्रीहरिने अपने इस मूल संप्रदाय कालुपुर श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान में की है, जो अन्यत्र दुर्लभ है ।

२. संत : संत अर्थात् संसार के प्रति जिसके मनमें अन्त हो गया हो ऐसी विभूति । महाराज के समकालीन नंद संतो की परंपरा केवल अपने मूल संप्रदाय में उपलब्ध है । संप्रदाय के नियमानुसार पुरुष वर्ग संतो का तथा बहनें साध्वीजी लोगों का साहचर्य (सत्संग) करके अपना जीवन सुधार सकती है ।

३. सत्शास्त्र : श्रीहरिने सत्संग मात्र के लिये शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण जैसे अनमोल ग्रन्थ दिये । भक्तचिंतामणी तथा नंदसंतो द्वारा रचित बहुत सारे शास्त्र परम्परा से प्राप्त है । स्वयं भगवानने जिस ग्रन्थ को लिखा हो तथा प्रमाणित किया हो, इस तरह की परम्परा अन्यत्र कहाँ है ?

४. मंदिर : महाराज हम सभी के लिये मंदिर का निर्माण करके दिये । स्वयं अपने माथे पर ईटा, पत्थर,

गारा रखकर मंदिर निर्माण के समय सेवा कार्य की प्रधानता का रहस्य समझाये । स्वयं मूर्तियों की प्रतिष्ठा करके स्वयं उसी में विद्यमान रहे हैं । अपनी मूर्ति प्रतिष्ठित करनेवाले इस सम्प्रदाय को छोड़कर अन्यत्र कही प्रमाण नहीं मिलता है । इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा को अधिकार भी अपने अपर स्वरूप आचार्य को ही दिया है ।

हम श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपों का आश्रय लेकर, धर्मकुल आश्रित संतो द्वारा ज्ञान प्राप्त करके, मूल संप्रदाय के सत्शास्त्रों का चिंतन, श्रीहरि/आचार्यश्री द्वारा निर्मित मंदिरों का आश्रय ग्रहण करके या दर्शन करके अपने जीव का कल्याण कर लेना चाहिये ।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ठीक ही लिखा है -

''नोती दीठी नोती सांभड़ी रे, प्रगटावी एवी पुनीत''
पुरुषोत्तम प्रगटी रे .....

●

भक्त का दुःख भगवान से भी सहन नहीं होता

- सां.यो. उषाबा गुरु सां.यो. कमलाबा (सुरेन्द्रनगर)

घोर कलियुग में करुणामय परमात्मा धर्म-भक्ति के घर प्रगट हुए । अनेक जीवों का उद्धार किये । अनेकों के अंतःकरण में विद्यमान अज्ञान/अंधकार को दूर करके प्रकाश फैलाये । अनेकों के दुःख को दूर करके सुखी किये । भगवानश्री स्वामिनारायण का स्वभाव अति करुणामय था । जीवों के थोड़े दुःख को भी नहीं सहन कर पाते थे । भक्त वत्सल भगवान हर समय सहायता के लिये दौड़ आते थे । चाहे कितना बड़ा दुःख होता भक्त की पुकार पर सामने होते ।

सौराष्ट्र के कमढिया नामक गांव में एकवार श्रीहरि पधारे । पीपल वृक्ष के नीचे बैठे थे । उसी समय कायाभाई नामक एक मुसलमान वहाँ से निकला । वह बहुत क्रोधीथा, उससे गाँव में कोई बोलता नही था ।

कायाभाई श्रीजी महाराज को देखकर आकर्षित हो गये । परिणाम स्वरूप वहाँ आकर सामने देखते रहे । श्रीहरि उन्हे मुमुक्षु जानकर कहे कि कायाभाई यहाँ आईये । श्रीहरि उनके साथ ज्ञान की वाते की, अब तो उनके जीवन में परिवर्तन आ गया । वे तो ऐसे लुट गये उस मोहिनी रूप में कि बोल उठे महाराज ! हमें आप अपना शिष्य बना लीजिये मैं आपके धर्म नियम पालन करुँगा ।'' बाद में श्रीहरि उन्हें पंचवर्तमान देकर कंठी धारण कराकर गढपुर लेगये ।

कायाभाई सत्संगी होगये, यह सुनकर उनके जाति के लोग उनका मजाक उड़ाने लगे । लेकिन कायाभाई अब भगवान के परम भक्त हो गये । मुस्लिम समुदाय के लोग कहने लगे कि कायाभाई अब हिन्दु धर्म स्वीकार कर लिये है । अपने घर में हिन्दु का मंदिर बनाकर हिन्दुओं को एकत्रित करके स्वामिनारायण की भजन करवाते हैं । इसलिये वे हिन्दु धर्म छोडदें ऐसी उपाय करनी होगी । सभी राजा के पास गये सभी वाते कह सुनाये, अब राजा कायाभाई को बुलाकर कहने लगा कि तूं स्वामिनारायण धर्म छोड़कर पुनः अपना धर्म स्वीकार करलो । तब कायाभाई ने कहा कि हे दरबार ! मैं स्वामिनारायण धर्म पालता हूँ मैं स्वयं सुधर गया हूँ, और दूसरों को सुधारता हूँ, इसलिये सत्संगि छोड़ नही सकता हूँ । यह सुनकर दरबारने कहा कि इसे तपती दुपहरी में आकाश के नीचे खड़ा रखो । फिर भी वह भक्त स्वामिनारायण नाम का स्मरण नहीं छोड़ा । भक्त का दुःख भगवान को सहन नहीं हुआ । इसलिये भगवानने एक चमत्कार किया, दरबार के पेट में भयंकर पीड़ा उत्पन्न कर दिया । उसके इलाज के लिये बड़े बड़े वैद्य आये, बहुत उपचार किये कोई फायदा नहीं हुआ । बाद में श्रीहरि का अनन्य भक्त रूशीभाईने दरबार से कहा कि ''तुम्हारे भीतर कोई रोग नहीं है ।'' तुमने खुदा के वन्दे का अपराध किया है, इसलिये पेट में दुःख रहा है । तुरंत कायाभाई को बुलाकर भजन की छूट दे दी । परिणाम स्वरूप सारा रोग चला गया, सुखी हो गया । श्रीहरि अपने भक्तों की इस तरह सहायता करते हैं ।

●

वैसे का वैसा (आवा ने आवा रे)

- चंपाबहन बी. पटेल (बापूनगर)

एक समय श्रीजी महाराज गढपुर में विराजमान थे । संध्या समय आरती के बाद नारायण की धुन चल रही थी । महाराज प्रसाद ग्रहण करके सभी के साथ नियम चेष्टा किये । बाद में सभी अपने-अपने आसन पर आराम करने गये । आसन पर कोई मानसिक ध्यान करने लगे, कोई माला फेरने लगे, प्रेमानंद स्वामी प्रेममग्न होकर श्रीहरि का कीर्तन करने लगे । महाराज अक्षर कक्ष में विराजमान थे । श्रावण मास था धीरे-धीरे पानी बरस रहा था । महाराज जाग गये और मधुर-आवाज से गीत सुनकर पूछे कौन गीत गा रहा है ? खड़े हो गये और बरसात में निकल पड़े, दरबार गढमें पहुँच गये । शरीर पर मात्र श्वेताम्बर धारण किये हुये थे । श्रीहरि की शरीर पर पानी की बूंदे मोती जैसी चमक रही थी । प्रेम स्वामी आधा दरवाजा खोलकर गीत गा रहे थे । इतने में महाराज दरवाजा खोलकर भीतर पहुँच गये और सामने जाकर बैठ गये । वहाँ तो प्रेम सखी को महाराज की वही झांकी हृदय में दिखाई दे रही थी । लेकिन महाराज के सामने जाते ही वह स्वरूप दिखाई देना बन्द हो गया, वे आंख खोल दिये तो देखा कि महाराज सामने बैठे हैं ।

वे कैसे थे तो जिनका श्वेताम्बर पानी से आधा भीगा हुआ था तथा शरीर पर पानी की बूंदे मोती की तरह शोभायमान हो रही थी । यह दृश्य देखकर प्रेम सखी ने गीत गाना प्रारंभ कर दिया -

आवा ने आवा रे, आवा ने आवा रे,
रहेजो मारी आंखलडीमां ..... आवा ने आवा रे ।
आवा ने आवा मारा नाथ बिराजे रे, हारे मारो तनना ताप बुझावा ।
डोलरना मित हार पहेरावुं, हारि रुडा तोरा लावुं लटकावा रे...
अमृत वेणे सुको मल नेणे, हारि अति अमृत झळी वरसावा रे.....
प्रेमानंद कहे नाथजीने आगे, हारि रहु हाजर निशदिन गावा रेजो.....
"पू. गादीवालाजी को कोटि कोटि प्रणाम"

●

भक्ति

- जयश्री सुरेशकुमार झिंझावाडिया (धांगध्रा)

जिन्हे इस संसार के बंधन से मुक्ति-चाहिये, महाप्रभु का. अक्षरधाम चाहिये वे धर्म, ज्ञान, वैराग्य के साथ भक्ति करे ।

इस सम्प्रदाय के त्यागी, गृही आबालवृद्ध नरनारी शिक्षापत्री में बताये गये नियम के अनुसार पालन करें । शिक्षापत्री में श्रुति स्मृति के अनुसार जैसे कहा गया है वैसा पालन करना ही सदाचार है । सदाचार ही धर्म है । जीव माया तथा ईश्वर को जानना ही ज्ञान कहा गया है । परब्रह्म ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान उनके सिवाय अन्यत्र प्रेम नहीं करना चाहिये । इसे ही वैराग्य कहते हैं ।

इसी तरह तीनों अंगो के साथ भगवान की भक्ति कही गयी है । इस भक्ति का स्वरूप जानकर भगवान श्रीकृष्ण के माहात्म्य के साथ स्नेह (प्रेम) को भक्ति कहते हैं । इस भक्ति के नव प्रकार कहे गये हैं । ज्ञान भक्ति का हृदय है । वैराग्य भक्ति का चरण कहा गया है । इसलिये इन तीनों अंगो के साथ भक्ति करना चाहिये । इस प्रकार भक्ति-ज्ञान-वैराग्य को समझकर सत्संग करने में आत्म कल्याण है । सभी अवतारों के अवतारी ऐसे जो पुरुषोत्तम नारायण भगवान उनके स्वरूप, स्वभाव, गुण, ऐश्वर्य इत्यादि से युक्त जानना चाहिये । जिन शास्त्रों में इन सभी बातों का वर्णन हो उन्हीं शास्त्रों का पठन-पाठन करना चाहिये । सुनना चाहिये ।

जो भगवान की भक्ति करते हों, उस भक्ति में कोई विघ्नकारक बनता हो तोउसे अपने रास्ते से हटाकर भक्ति करनी चाहिये । भक्ति आत्मज्ञान के साथ तथा वैराग्यपूर्णहो तो स्थाई रहती है । भक्ति करने वाले के विचार धार्मिक हों तो भक्ति और भी दृढ होती है । महाराजने वडताल के तीसरे वचनामृत में कहा है कि "अतिशय माहात्म्य सहित भगवान ने विशे जो भक्ति होय तो धर्मादिक जे त्रणे अंग तेने विशे आवी जाय छे. अने ते माहात्म्य सहित भक्ति जीवना हृदय में साधन दशावाला एकांतिक तथा सिद्ध दशावाला परम एकांतिक साधुनी सेवा मन, कर्म, वचने करतो आवे छे, अने ते माहात्म्य विनानी भक्ति झाझी जणाती होय तो वण अंते नाश थई जाय छे.

इसलिये महाराजकी आज्ञानुसार माहात्य समझ कर भगवान की भक्ति करना श्रेयष्कर है ।

"घनश्याम, तारो मलक मारे जोवो छे

ओ वाला घनश्याम रे,
मने तारा मलक मां लई जाने रे,
मारे तारो मलकतो जोवो छे ओ० १
नित्य तारी भक्तिमां हु मलकायो,
जाई स्म तारुं हुं हरखायो,
ओ वाला घनश्याम रे,
मने तारा मलकनो रंग लाग्यो ओ० २
तुं भगवान नो य भगवान छे,
चौवीस अवतारना अवतारी छे,
ओ वाला घनश्याम रे,
मने तारा ने संगे हवे रमवुं छे ओ० ३
आकाशे सूर्य, चंद्रनुं मोटुं हालरडुं,
बनाव्युं पहाडो, नदियोनुं पटाडुं,
ओ वाला घनश्याम रे,
मारे अक्षरधाम तारुं जोवुं छे ओ० ४
भोला भक्तना हैया थी तूं भोलवायो,
भक्तिमारी देखीने तुं मलकायो,
ओ वाला घनश्याम रे,
रंग महोलमां तुं आवी अटवायो ओ० ५

- प्रहलादभाई वी. पटेल (करीजसणवाला-न्युजर्सी)

संप्रदाय का गौरव

न्युझीलेन्ड के ओकलेन्ड शहर में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान (I.S.S.O.) का सर्व प्रथम भव्य शिखरी मंदिर निर्माण का यश डॉ. कांतिभाई पटेल को न्युझीलेन्ड सरकार द्वारा (Queen's Service Medal For Services To Community Medecine and Indian Community) संमानित किया गया था । अपने संप्रदाय के लिये ही नही बल्कि भारत वासियों को इसका गर्व होना चाहिये । (जे.पी.) के पद से अलंकृत हैं । उनका सम्पूर्ण परिवार (डो. कांतिभाई श्री जयंतीभाई, रंजनाबहन, राकेश, दीपक) अपने अधिक समय को मंदिर की सेवा में बिताते है ।

अभी थोड़े समय पूर्व पू. ध्यानी स्वामी न्यूझीलेन्ड पधारे थे उस समय अचानक गिरजाने से फैक्चर हो गया था । तब डोक्टरने स्वामी की उत्तम सेवा की थी, जिस से स्वामी खूब प्रसन्न थे ।

डोक्टर साहब की देखरेख में करीब १२ क्लीनिक ओकलेन्ड में चलती है, जिसमें करीब ४२ डोक्टर कार्यरत है ।

प्रश्न पेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ ज्येष्ठजित राजा किसके पुत्र थे ?

प्रश्न : २ आदि सत्युग में बदरीकाश्रम में रहकर नरनारायणदेव किस लिये तप करते हैं ?

प्रश्न : ३ महानुभावानंद स्वामी अपने मंडल के साथ सारंगपुर उत्सव प्रसंग में बाहर गाँव से आये उस समय स्वामिनारायण भगवान जीवा खाचर के दरबार में विराजमान हुये, स्वामी आकर उन्हें दंडवत किये उस समय श्रीजी महाराज पैर फैला कर विराजमान थे। स्वामी जब श्रीजी महाराज का चरण दबाना प्रारंभ किये उस समय तो अरे यह क्या हुआ ?

प्रश्न : ४ "नीची टेल मले तो माने भाग्य जो, भव ब्रह्मादिक ने निश्चय मळती नथी" .... इस पंक्ति को पूर्ण करो..... इसकी रचना किसने की है ?

प्रश्न : ५ गढढा के नजदगीक मं एक गाँव है - मांडवधार वहाँ दादा खाचर की जागीर थी। इसके लिये सदा झगडा होता रहता था। इसलिये कितने लोगों को दादा को लेकर श्रीजी महाराज के साथ भी द्वेष भाव हो गया था। वहाँ एक रबारी रहता था वह भी द्वेष भाव रखता था, उस रबारी का क्या नाम था ?

प्रश्न : ६ गाँव सुंदरियाणा के अग्रणी बैष्णव वैद्यराज कौन थे जिन्हे गोपालानंद स्वामीने सत्संग करवाया था ?

प्रश्न : ७ मारा प्राणजीवन (२) आवलडुं अम साथे, कहोने केम कीधुं, पहेला पीयूषपाई (२) वालमजी बांसे थी विषडुं केम दीर्घ..... श्रीजी महाराज को उलाहना देने वाले इस पद के रचयिका कौन थे ?

जनवरी २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) गढडा प्र. ३७ का वचनामृत। (२) "आ घरेणां मूली मंदिरमां श्री राधाकृष्णदेवनी सेवा मां वापरजो।" (३) "प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री थे, उनका गादी अभिषेक संवत् १८८२ कार्तिक शुक्ल-११ को हुआ था। (४) नागेशराजा तथा रणगामी राजा की पुत्री थी। (५) स.गु. मुक्तानंद स्वामी। (६) खाली हाथ नहीं जाना चाहिये यह शिक्षापत्री के ३७ वें श्लोक में कहा गया है। (७) ब्रह्मलोक के कवि स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी।

१. विनोदभाई पटेल - वहेलाल
२. गोरधनभाई एस. पटेल - सोजा
३. अमृतलाल क. मोदी - सोजा
४. गंगाबहन पी. पटेल - झूलासणा
५. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
६. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - अहमदाबाद
७. ज्योत्सनाबहन राजूभाई - आनंदपुरा
८. पटेल हार्द, हेली किरीटभाई - नरोडा
९. सुभद्राबहन आर. पटेल - कनीपुर
१०. गोरधनभाई वी. सीतापरा - बापुनगर
११. मफाजी सरदारजी डाभी - डांगरवा
१२. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल - ऊँझा
१३. भावनाबहन कमलेशकुमार खंधडिया - मोरबी
१४. वीणाबहन आर. भावसार - अहमदाबाद
१५. अरविंदाबहन एन. भावसार - अहमदाबाद
१६. सांख्ययोगी मंजूबा - भारतीबा - हवेली
१७. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
१८. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - दहेगाँव
१९. सांख्ययोगी शिल्पाबा - सुरेन्द्रनगर
२०. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
२१. भानुबहन भगवानभाई परमार - बोडका
२२. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
२३. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
२४. अमरीशभाई वी. विठ्ठलपरा - नवसारी
२५. अशोकभाई भोलीदास पटेल - वडु
२६. माधवजीभाई अद्रोजा - मोरबी
२७. साकरबहन नटवरभाई पटेल - दहेगाँव

श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के हरि मंदिरों के कोठारियों को सूचना

समस्त अहमदाबाद मूली तथा भूज मंदिर को कोठारियों को सूचि किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपूर अहमदाबाद के हरि मंदिर से संबन्धित आवेदन पत्र अभी तक कोठारी लोग भरकर भेंजे नही है। जिसे समय से भेंजने की सूचना दी जाती है। इसके साथ ही अपने फोन नं. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपूर कोठारी स्वामी को फोन द्वारा पत्र द्वारा या जानकारी देना आवश्यक है।

सत्संग समाचार

पवित्र तीर्थभूमि नारायणघाट मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

साबरमती के किनारे पर आये हुए पुण्य-पवित्र महान तीर्थभूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रसन्नता से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद) तथा महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ११-१-२००९ के रविवार के शुभ दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

प्रासंगिक सभा में श्रीजी महाराज के समय में किये गये शाकोत्सव की महिमा का सुंदर कथागान स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने किया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो शाकोत्सव का अलौकिक वधार करवाया गया। विशाल मंदिर तथा विशाल मंदिर के आँगन में मानवमेदनी इतनी थी की पाँव रखने की भी जगह नहीं थी। दूरदर्शन तथा ई.टी.वी. की केमेरा टीमने उनेक अद्‌भूत केमेरे में इस प्रसंग का शूटींग करके गुजरात की धार्मिक जनता को दर्शन करवाकर सेवा का काम किया था।

अंत में समस्त सभा को तथा यजमान परिवारों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दिव्य आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग के मुख्य यजमान प.भ. कांतिभाई रेवाभाई पटेल, श्री अतिम कांतिभाई आंगडीया ह. श्री राजुभाई (विहार) सह यजमान प.भ. भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट, प.भ. डॉ. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट ह. राजदिप ब्रह्मभट्ट (नारणपुरा) शब्जी के यजमान प.भ. कांतिभाई जोईताराम पटेल (घनश्याम कन्स्ट्रक्शन कां. ह. दिनेश, जयेश तथा निलेश) परिवारने सुंदर लाभ लिया था। इस के अलावा अनेक हरिभक्तोने सेवा प्रदान कि थी। सभा संचालन स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी कोटेश्वर गुरुकुळ) ने संभाला था।

अन्य सेवा में स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पुजारी), पुजारी स्वा. बालस्वरूपदासजी, शा. स्वा. व्रजभूषणदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरूपदासजी बडील संत भानुप्रकाशदासजी, शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा भी प्रेरणास्प थी।

- योगी स्वामी गुरुमहंत स्वामी अहमदाबाद मंदिर

श्रीहरिके प्रसादी के मोटेरा गाँव में पारायण-शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी कोटेश्वर गुरुकुल) की प्रेरणा से श्रीजी महाराज के दिव्य चरणों से अंकित मोटेरा गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २२-१२-०८ से ता. ३०-१२-०८ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन (रात्री) नवान्ह पारायण का सुंदर आयोजन स.गु. शा.स्वामी रामकृष्णदासजी (सहजानंद, गुरुकुल कोटेश्वर) के वक्ता पद पर संगीतमय शैली में संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर भव्य शाकोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। जिसके यजमान पद पर प.भ. भाभीलालभाई अंबालाल पटेल परिवारने अलभ्यदेव दुर्लभ लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया था।

ता. ३०-१२-०८ के शुभ दिन शाम को ६-०० बजे.प.पू. बडे महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से कथा पारायण की पूर्णाहुति तथा शाकोत्सव का अलौकिक वधार करवाया गया।

इस प्रसंग पर स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद कालुपुर) स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पूजारी) आदि संत मंडल उपस्थित रहे थे। हजारो भक्तजनोने कथामृत के अमृत आचमन के साथ शाकोत्सव का महाप्रसाद लिया था।

- शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी

समौ मंदिर में कथा पारायण तथा शाकोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरि की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के दिव्य आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी कोटेश्वर गुरुकुल) की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. ४-१-०९ से ता. १०-१-०९ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह ज्ञानयज्ञ स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर) के वक्तापद पर संगीतमय शैली में हजारो भक्तजनो को कथामृत का पान करवाया था। पारायण के मुख्य यजमान पद पर प.भ. चौधरी बळदेवभाई बेलीभाई तथा प.भ. चौधरी भगाभाई वेलजीभाई परिवनरे लाभ लिया था।

पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा पारायण की पूर्णाहुति करके आरती उतारी थी सभा में यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव का अलौकिक वधार करवाया गया। इस प्रसंग में अनेक नामी-अनामी हरिभक्तोंने सेवा करके श्रीहरि तथा प.पू. महाराजश्री को प्रसन्न कर दिया था। बहनो के आमंत्रण को मान देकर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) आदि संतोने प्रसंगोचित दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट), ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पूजारी) स.गु. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, स.गु.

स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (बालवा) आदि संत मंडलने पधारकर सुंदर लाभ दिया था ।

- शा. जयकृष्णदासजी, अहमदाबाद मंदिर

जेतलपुरधाम में श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण

श्रीहरि को अत्यंत प्रिय ऐसे जेतलपुरधाम में बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २९-१२-०८ से ता. ४-१-०९ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण धूमधाम से संपन्न हुई ।

इस पारायण के यजमानपद पर रमेशभाई नारायणभाई खेताणी, धर्मपत्नी रतनबहन आर. खेताणी सुपुत्र श्री किशन, सुपुत्री दीनाबहन आदि परिवारने (सुखपर (कच्छ) वर्तमान में लंडन) लाभ लिया था ।

सात दिन तक जेतलपुर तथा आस-पास के गाँव अहमदाबाद तथा कच्छ के १००० जितने हरिभक्तोंने तथा १५० सांख्ययोगी बाईओने कथामृत का दिव्य लाभ लिया था ।

कथा के वक्तापद पर स.गु. शास्त्री स्वामी पुस्त्रोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी जेतलपुर) ने बिराजकर कथामृत का रसपान करवाया था । समस्त धर्मकुल तथा दूर दूर से संतोने पधारकर कथामृत का पान किया था ।

ता. ३१-१२-०८ के दिन शाकोत्व मनाया गया था । जिस में २५०० हरिभक्तोंने लाभ लिया था । ता. १-१-०९ के दिन समूह महापूजा में ४०० जितने हरिभक्तोंने समूह में लाभ लिया था । रात्री सांस्कृतिक प्रोग्राम में श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर वाडी के संतोने डांग रास तथा पंचाला का रास करके सभी को आनंदित कर दिया था । तथा ठाकर थाली का भी सुंदर आयोजन किया गया था । ता. २-१-०९ से ता. ४-१-०९ तक महाविष्णुयाग का आयोन किया गया था । योगानुयोग श्रीहरिने आज से २०० वर्ष पहले इसी दिन जेतलपुर में महाविष्णुयाग किया था । जिसका लाभ यजमान परिवारने लेकर जीवन को धन्य बनाया था ।

ता. ४-१-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के गादी धारण करने के बाद प्रथमबार जेतलपुर में भव्यातिभव्य स्वागत किया गया था । जिस में कच्छ सत्संग अहमदाबाद तथा दशकोशी के हरिभक्तोंने भाग लिया था । ता. ४-१-०९ के दिन पारायण की पूर्णाहुति के दिन यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती करके वक्ताश्री का तथा संहितापाठी वक्ताश्री का तथा संतो का पूजन किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद प्रदान किये थे । महोत्सव में सेवा करनेवाले स्वयं सेवको का महंत स्वामीने सन्मान किया गया । सभी संत हरिभक्तोने ठाकुरजी के अन्नकूट का दर्शन, आचार्य महाराजश्री केदर्शन करके महाप्रसाद लिया था। कथा के दरम्यान प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे । *- महंत के.पी. स्वामी*

जेतलपुरधाम में धनुर्मास का महोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि इष्टदेव श्री रेवती बलदेवजी महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से धनुर्मास में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के महामंत्र की धून से सुप्रभात में भक्ति का दिव्य वातावरण सर्जीत हुआ था । जेतलपुर वाड़ी के विद्यार्थी संत तथा ब्राह्मण बटुको की विशाल हाजरी में गाँव के तथा आस-पास के गाँव के भक्तों ने लाभ लिया था । ता. १२-१-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धून में पधारे थे । सभी को दर्शन देकर आशीर्वाद का लाभ प्रदान किया था ।

-महंत के.पी. स्वामी

तथा जेतलपुर बहनों के मंदिर में (हवेली) प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के दिव्य आशीर्वाद से सा.यो. बचीबा की प्रेरणा से धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून समग्र महिने में की थी । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने धून में पधारकर बहनों को दिव्य दर्शन-आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था । ता. १०-१-०९ के दिन हवेली में खीचड़ी का उत्सव धूमधाम से मनाया था । जिसका लाभ बहनो नें बड़ी संख्या में लिया था ।

- प्रेमीलाबहन जेठवा

हर्षदकोलोनी (बापुनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

बापुनगर के पूर्व विस्तार में सौराष्ट्र के हजारों लोग हीरा घीसने का काम करके अपनी आजीविका व्यतीत करते थे । परंतु वैश्विक मंदी के कारण हजारो लोग बेकार हो गये । उन्हें मददस्य होने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा दासभाई की प्रेरणा से श्री भरतभाई भावसार तथा श्री वल्लभभाई बाबरिया की तरफ से तथा हर्षदकोलोनी अपने मंदिर की तरफ से ता. ११-१-०९ के दिन जरूरतमंद लोगों को ३०० अनाज की कीट का वितरण किया गया था । जिसमें १२ किलो गेहूं, २ किलो चावल तथा १ किलो मूंगकी दाल आदि प्रदान किये गये थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने प्रशंसनीय सेवा प्रदान की थी ।

- गोरधनभाई सीतापरा

इडर देश में उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा इडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से इडर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास दरम्यान धून महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । आस-पास के गाँव के हरिभक्तोंने धून में लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया था ।

मणियोर गाँव : इस गाँव के अपने मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ३१-१२-०८ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । हरिभक्तोंनें पाटोत्सव तथा अन्नकूट के दर्शन करके प्रसन्न हुए थे ।

अरोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर : मे ता. २८-१२-०८ के दिन शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । गाँव के प्रेमी हरिभक्तोंने शाकोत्सव के दर्शन किये तथा संतो की प्रेरक वाणी का लाभ लेकर आनंदित हुए थे । उसी प्रकार साचोदर गाँव के अपने मंदिर में ता. २५-१२-०८ को शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । संतोने शाकोत्सव का वधार करके ठाकुरजी

था भोग लगाकर समग्र गाँव को प्रसादका लाभ प्रदान किया था। - *साधु सत्यसंकल्पदास*

साबरमती (रामनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पूजनीय संतो की प्रेरणा से धनुर्मास में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की महामंत्र धून में प्रातः ३५० जितने हरिभक्त लाभ लेकर पधारे थे। इस प्रसंग पर कोटेश्वर गुरुकुल से शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा कांकरिया के महंत शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा शा. यज्ञस्वरूपदासने कथामृत का लाभ प्रदान किया था।

ता. ११-१-०९ को कोटेश्वर गुरुकुल में शाकोत्सव मनाकर १००० जितने हरिभक्तोंनें लाभ लिया था। शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने शाकोत्सव के सुंदर महिमा का सुंदर वर्णन किया था। - *रावजीभाई टी. पटेल*

नारायणपुरा (ता. कडी) गाँव की तरफ से श्री स्वामिनारायणम म्युझियम में सेवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से नारायणपुरा गाँव की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम में प्रसादी की वस्तुए प्रदान करने के लिये ता. ५-१-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री को आमंत्रण दिया था। हरिभक्तोने उत्साहपूर्वक उसका लाभ लिया था। प.भ. अंबालाल पटेल, हरजीवनदास के यहाँ प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। प.भ. अंबालालभाई के दादा प.भ. चतुरभाई झवेरभाई के परिवार की तरफ से परंपरागत प्राप्त श्रीहरि की अलौकिक प्रसादी की वस्तुए खेस, माला, नास्बुन, केश, चरणाविंद तथा मूर्ति प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण की थी। उसके साथ गाँव के हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में ७५ हजार रुपिये की सेवा अर्पण करके प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी। इस प्रसंग पर स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी आदि संत मंडल पधारे हुए थे। प.पू. बड़े महाराजश्रीने अति प्रसन्न होकर दिव्य आशीर्वाद दिये थे। - *शा. धर्मकिशोरदास*

वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से सां. सुरजबा (पुजारी) की तरफ से डिसेम्बर महिने में श्रीमद् सत्संगिजीवन (दूसरा प्रकरण) कथा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने पधारकर सां. सुरजबा तथा बहनों को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे।

पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। तथा सभी को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे।

- *शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी*

लवारपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से यहाँ के गाँव में समस्त हरिभक्तों की तरफ से पोष महिने में भव्यातिभव्य शाकोत्सव मनाया गया। शाकोत्सव की समग्र सेवा प.भ. राजुभाई कालाभाई जेशंगभाईने प्रदान की थी। अहमदाबाद से संतोने पधारकर सभी को कथा का रसपान करवाकर भगवान का विशेष भजन करवा के आशीर्वाद दिये थे।

- *शा. आनंद स्वामी*

चांदीसणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद से चांदीसणा श्री स्वमिनारायण मंदिर के सुवर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-१-०९ से ता. ७-१-०९ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंध की त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। संहिता पाठ में शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (बालवा) बिराजे थे।

ता. ४-१-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे तथा ग्रामजनो को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे। समस्त गाँव की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम में रु ५१,०००/- अर्पण किये थे। इस प्रसंग पर रात्री कार्यक्रम में विसनगर श्री सहजानंद किशोर मंडल ने कीर्तन भक्ति का सुंदर लाभ दिया था।

ता. ६-१-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तब गाँव के हरिभक्तो ने संतो के साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीं का भव्य शोभायात्रा निकालकर स्वागत किया था। प.पू. महाराश्रीने मंदिर में पधाकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए थे। तथा कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी। सभा में अग्रगण्य हरिभक्तोनें प.पू. आचार्य महाराजश्री की समूह आरती की थी। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, जेतलपुर, माणसा, सिद्धपुर, गांधीनगर (से-२) आदि मंदिरो के संतोने पधारकर सुंदर अमृतवाणी का लाभ प्रदान किया था। - *शा.स्वा. आनंदजीवनदास*

माणेकपुर मंदिर में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद के साथ तथा नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. गोपालभाई लवजीभाई चौधरी परिवार की तरफ से अपने पिताश्री अ.नि. लवजीभाई मसोतभाई तथा मातुश्री जोईतीबहन के स्मरण हेतु ता. २०-१२-०८ से ता. २४-१२-०८ तक श्रीमद् भागवत कथा शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (महंतश्री, नारायणपुरा) के वक्तापद पर हुई थी। कथा प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवलाश्रीने पधारकर बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था। पूर्णाहुति के प्रंसग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। तथा मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर दर्शन करके सभा में पधारे थे। जहाँ यजमान परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्रदान किये थे। उसके बाद कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर प.भ. लवजीभाई की सेवा की प्रशंसा करके दिव्य आशीर्वाद दिये थे। - *शा. आनंदजीवनदासजी*

आदिश्वरनगर नये नरोडा का श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से धनुर्मास में धून महोत्सव ता. ४-१-०९ के दिन शाकोत्सव का प्रसंग हरिभक्तोंने धूमधाम से मनाया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर, नारायणघाट मंदिर, निकोल तथा वहेलाल से संतमंडलने पधारकर कथावार्ता का लाभ प्रदान किया था। म्यु.कोर्पो. श्री भरतभाई पटेल तथा डे. मेयर श्री कल्पनाबहन भट्ट आदिने दर्शन का लाभ लिया था। *- बेचरभाई परमार*

दहेगाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गाँव के सभी हरिभक्तों के सहकार से समग्र धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई थी। *- कोठारी अरविंदभाई अमीन*

कालीयाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर

धनुर्मास में दोनों श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी की मंगला आरती के बाद गाँव में प्रभात फेरी का आयोजन किया गया था। उसके बाद ६-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा कीर्तन भक्ति तथा अंत में प्रसाद का वितरण किया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर चल रही है। *- कोठारीश्री*

हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी तथा महंत शास्त्री स्वामी हरिजीवनदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार स्कीम कमिटी सभ्य प.भ. डॉ. के. के. पटेल परिवार के यजमानपद पर शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था। ता. ४-१-०९ के रविवार के दिन भोलेश्वर महादेव में नेत्रामली के प.भ. डॉ. के. के. पटेल साहबने स्वागत प्रवचन किया था। हिंमतनगर, इडर तथा टोरडा के महंतश्रीओने शाकोत्सव का महिमा समझाया था। डॉ. साहेबने इस प्रसंग में सेवा-सहकार प्रदान करने वाले सभी का आभार व्यक्त किया था। ठाकुरजी को भोग लगाकर आरती करके शाकोत्सव के प्रसाद लाभ सभी ने लिया था।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने बहुत प्रेरणात्मक सेवा प्रदान की थी। उसी प्रकार बहनो की रोटी बनाने की सेवा भी प्रसंशनीय थी। *- अमृतभाई एस. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में धनुर्मास में ६-३० से १४-१-० तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंध की कथा दोपहर ३ से ४ तक स्वामी भक्तिप्रियदासजी (लेईवाले) ने की थी। मंदिर की तरफ से मकरसंक्रांति के दिन श्वानो को लड्डू खिलाये गये थे। सभी हरिभक्तोंने धून का लाभ लिया था। *- कोठारीश्री*

वहेलाल मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा साधु चैतन्यमुनिदासजीकी प्रेरणा से धनुर्मास में श्रीहरि की महामंत्र धून तथा ११-१-०९ के दिन शाकोत्सव मनाया गया। जिसमें संतोने सुंदर कथावार्ता का लाभ प्रदान किया था। भाविको की बड़ी संख्या में भीड़ इस प्रसंग पर उपस्थित रहे थे। *- गोरधनभाई सीतापरा*

घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

अहमदाबाद के घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १२-१-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से अलौकिक सब्जी का वघार करके शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद) छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा महेसाणा मंदिर के संतोने भगवान के लीला-चरित्र तथा शाकोत्सव की महिमा के साथ धर्मकुल माहात्म्य भी समझाया था। अंत में समस्त सभा को तथा संतो पर प्रसन्न होकर दिव्य आशीर्वाद भी प्रदान किये। कोठारी प.भ. सोमभाई पटेल आदि आगेवान हरिभक्तोंने सुंदर मार्गदर्शन प्रदान किया था। *- प्रविणभाई पटेल*

धरियावद (राजस्थान)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २५-१२-०८ से ता. ३१-१२-०८ तक श्रीमद् भागवत पारायण महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी के वक्तापद पर संगीत शैली में हिन्दी भाषामें संपन्न हुई थी। हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में कथा का लाभ लिया था।

जिस के यजमान गाँव म्याला के सरपंच प.भ. नारायण लालजी मीणा परिवार बने थे। कथा में सभी प्रसंगो को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर शा. अचलप्रकाशदास तथा शा. सुखनंदनददासने सुंदर सेवा प्रदान की थी। *- श्रीजीस्वरूपदास*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिरमां धनुर्मास धून

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में पवित्र धनुर्मास में ब्रह्मानंद सभा मंडप में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराजश्री की उपस्थिति में संत-हरिभक्तों द्वारा प्रातः ६ से ७ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गई थी। अंदाजित ८०० से १००० जितने भक्तजनोने समग्र महिनेमें धून का लाभ लेकर दिव्यानंद अनुभव किया था। यहाँ के महंत शास्त्री स्वामी नारायणप्रसाददासजीने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था। *- भरत भगत*

चराडवा मंदिर में धनुर्मास का उत्सव मनाया गया

मूली के श्री राधाकृष्णदेव ताबा के चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समग्र धनुरमास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून से गुज उठा था। चराडवा मंदिर के ५० जितने गाँव में समग्र महीने में संतो द्वारा कथा-वार्ता-धून-भजन आदि का कार्यक्रम किया

गया था । चराडवा मंदिर के महंत स्वामी हरिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से धून का सुंदर आयोजन किया गया था । गाँव के तमाम भक्तजनोने दिव्य लाभ लेकर जीवन को धन्य बना लिया था । *- श्री न.ना.देव युवक मंडल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा गाँव

चराडवा गाँव में छपैयाधीश बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज के दिव्य सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से ता. १६-१-०९ से ता. १८-१-०९ तक प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के सानिध्य में सत्संग महिला शिबिर का सुंदर आयोजन किया गया था । जिसमें दश हजार से भी अधिक कर्मयोगी बहनोने भाग लिया था । समस्त बहनो का तीन दिन तक प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने सर्वोपरि इष्टदेव माहात्म्य महिमा के साथ अपनी अलौकिक अमृतवाणी आशीर्वाद स्मी वचन सुनाकर अलौकिक सुख प्रदान किया था ।

इस प्रसंग पर धर्मकुल पूजन के यजमान पद का लाभ प.भ. क्रिष्नाबहन नविनभाई मांडलीया के परिवार (मोरबी)ने लिया था ।

मूली के अलर्क बावली में श्रीहरिने महारास किया था । उसी प्रकार वैसे ही रास लीला बहनो के साथ प.पू. बड़ी गादीवालाश्री खेली थी । प.पू. बड़ी गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में महापूजा धूमधाम से संपन्न हुई । जिस के यजमान पद का लाभ प.भ. मनीषाबहन दवे के परिवारने लिया था ।

खीचड़ी उत्सव भी दिव्यता से मनाया गया । इस प्रसंग पर सां. राजकुंवरबा, उषाबा, चंपाबा तथा अहमदाबाद, कडी, ऊँझा तथा हलवद से सांख्ययोगी बा पधारी थी । यहाँ के महंत शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से चराडवा गाँव के हरिभक्तोने तथा मूली के संत-पार्षद मंडलने प्रशंसनीय सेवा की थी । *- विशाल भगत चराडवा*

नरनारायण नगर (ता. हलवद) में शाकोत्सव मनाया गया

मूलीश्री राधाकृष्णदेव के नरनारायणनगर गाँव के श्री नरनारायणदेव के पीठाधपित प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज की आज्ञा से तथा अ.नि. पूज्यनीय संत स.गु. राधामनोहरदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा मूली मंदिर के शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी की सुंदर मार्गदर्शन से नरनारायणनगर तथा कृष्णनगर गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से दिव्याति दिव्य सब्जी का अलौकिक बघार करके शाकोत्सव मनाया गया था । हलवद विस्तार के हजारो संख्या में भक्तजनो ने ऐसे अलौकिक दर्शन पाकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त करके अपना जीवन धन्य बनाया था । चराडवा के महंत शा. हरिप्रकासदासजी के सुंदर आयोजन में हरिभक्तोंने अच्छी सेवा की थी । मूली से स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी इत्यादि संत इस कार्य में उपस्थित थे । *- प्रेमस्वरूपदास*

मूली श्री राधाकृष्णदेव के नये पुजारी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पुजारी के रूप में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी स.गु. स्वामी हरिस्वरूपदासजी को नियुक्त किया है ।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से वोशिंग्टन डी.सी. में २१ दिसम्बर रविवार को सायंकाल ४ बजे से ८ बजे तक सर्वनापार्क कोम्युनिटी सेन्टर में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में वचनामृत का पाठ, कीर्तन, भक्ति, नित्य नियम आरती इत्यादि ठाकुरजी के समक्ष किया गया था । शा. सिद्धेश्वरदासजीने फोन पर धनुर्मास की महिमा का श्रवण कराया था । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे । आगे की प्रत्येक सभा ग्रोस इपीस्कोवल चर्च के "पेरीस" होल में इल्करीज मेरीलेन्ड में होगी ।

- कुभाई पटेल

पूर्व आफ्रिका सत्संग श्री स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से पूर्व आफ्रिका श्री स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी में नूतनमंदिर के नव में तथा मूल स्थापना के ६४ वें वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन के ४ चतुर्थ प्रकरण के सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता भुज मंदिर के स.गु. स्वामी शांतिप्रियदासजी थे । पूर्णाहुति के दिन ता. २५-१२-०८ को सुखपर गाँव के अ.नि. वेलजीभाई खीमजी गोरसिया ता. २६-१२-०८ के दिन बडदिया गाँव के श्री खजीभाई खीमजीभाई के सम्पूर्ण परिवार द्वारा भोज़न का आयोजन किया गया था । उन्ही की तरफ से भुज मंदिर, अहमदाबाद मंदिर तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये भेट अर्पित की गई थी ।

इस पाटोत्सव पारायण प्रसंग पर अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भुज मंदिर के वयोवृद्ध स.गु. पू. महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी संत मंडल के साथ पधारे थे । पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से अन्नकूट की आरती उतारकर कथा के पूर्णाहुति की आरती उतारी गई थी । बाद में पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा पू. महंत स्वामी ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में मंदिर के अध्यक्ष श्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई राघवाडीने अपने मंतव्य दिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ का उत्सव बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ था । *- मंत्रीश्री भीखालाल वेलजी गोरसिया श्री स्वा.ना.मं. नाईरोबी*

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



जेतलपुर धाममें पारायण प्रसंग पर दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा कथामृत पान कराते हुये पूज्य पी.पी. स्वामी



जेतलपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में पारायण के यजमान परिवार (कच्छ-लंडन)



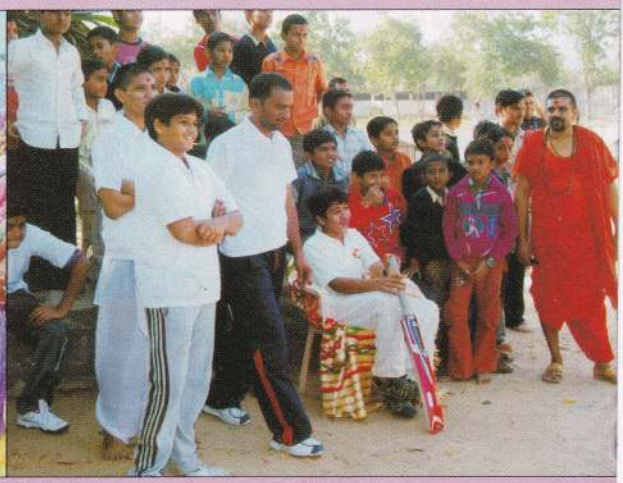
जेतलपुर पारायण प्रसंग पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री



चराडवा (मूलीदेश) में प.पू. बड़ी गादीवालाजी की उपस्थिति में महि सत्संग शिबिर में हजारों की संख्या में भाग लेती हुई सत्संगी बहनें



धरियावद (राज.) मंदिर में कथा का लाभ लेते हुये ग्रामजन



कोटेश्वर गुरुकुल में प.पू. लालजी महाराजश्री सत्संगी बालकों के साथ

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

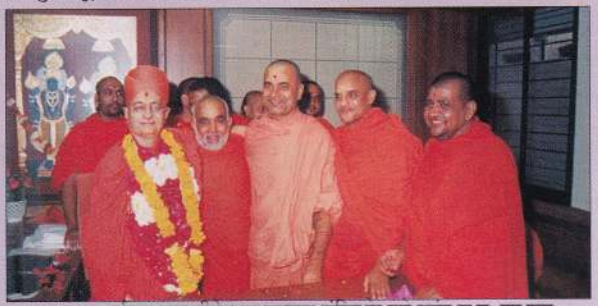




इष्ट आफ्रिका श्री स्वा.ना.मं. नाईरोबी मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा नाईरोबी के राजमार्गो पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुये पू. आचार्य महाराजश्री के साथ संत मंडल



चरोहिल अपने मंदिर में २६ वीं जनवरी का प्रजासत्ताक दिन मनाया गया



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अहमदाबाद मंदिर के नये महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी को नियुक्त किया उस समय की तस्वीर के साथ को.कृष्णवल्लभ स्वामी, पी.पी. स्वामी, देवप्रकाश स्वामी तथा ब्र. प. गजेश्वरानंदजी



श्री नरनारायण देव

प.पू.ध.धु.आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनी आज्ञाथी

प.पू. आदि आचार्य
श्री अयोध्या प्रसादजी
महाराज श्री
जन्म द्विशताब्दी
महोत्सव

धर्मकुळ वंदना महोत्सव



प.पू. आदि आचार्य
श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री



ता. १ थी ३ जून २००९ જેઠ સુદ ૯ થી ૧૧ સુધી

સ્થળ:- ગણેશ હાઉસીંગ કોર્પો.લી., સરખેજ-ગાંધીનગર રોડ,
થલતેજ ચોકડીથી સોલા બ્રીજ વચ્ચે, થલતેજ, અમદાવાદ

-:આયોજક:-

Kharsani